उपनिषद्-सुधा बिन्दु (जनवरी २०१२)

स्वर्गे लोके न भयं किंचनास्ति न तत्र त्वं न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वाशनायापिपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके।।

(कठोपनिषद् : १/१/१२)

(नचिकेता ने कहाह्वह्व)''स्वर्गलोक में किंचित् भी भय नहीं है। वहाँ मृत्युरूप स्वयं आप भी नहीं हैं। वहाँ कोई वृद्धावस्था से भय नहीं करता। वहाँ सब भूख और प्यासह्वह्वइन दोनों पर विजय प्राप्त करके दुःखों से परे रहते हुए आनन्द भोगते हैं।''

पहला कवर पेज

मानवीय शक्ति से मन पर विजय पाना असम्भव है। इस हेतु भगवत्कृपा और गुरु का आशीर्वाद चाहिए। अतः प्रार्थना करें। भगवान् के चरणों में पूर्ण समर्पण करें। तब आप भगवत्कृपा के अधिकारी बन पायेंगे।

ह्वह्वस्वामी शिवानन्द

शिवानन्दस्तुतिः

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

संन्यासयोगसुमहानलदग्धघोर–
संसारहेतव इह प्रचरन्ति लोके ।
बद्धान् भवाख्यनिगडैः परिमोचयन्तः
साक्षादतीन्द्रियकरैः कृतचित्रकृत्याः ।।१

जिन्होंने संन्यास एवं योग की महा अग्नि से संसार के भीषण बीज को जला कर भस्मीभूत कर दिया है, वे अपने अतीन्द्रिय हाथों से अद्भुत कार्य करते हुए, तथा जन्म–मरण की शृंखलाओं में आबद्ध लोगों को मुक्त करते हुए इस जगत् में विचरण कर रहे हैं।

ब्रह्मानन्दसुधासमुद्रकणिकारूपैर्वचोभिर्जनान्
शान्तिं पाययति प्रमोदमथ तज्ज्ञानत्विषा बोधयन् ।
मोक्षार्थं यतमानसाधकगणं कारुण्यसान्द्रैकहृत्
मार्गं यो दिशते गुरुः स हि शिवानन्दो जयत्यात्मवान् ।।२

उन शिवानन्द जी की, सद्गुरुदेव की, आत्मज्ञान–प्रदाता की जय हो, जो ब्रह्मानन्द के अमृत–सागर की बूँदों जैसे अपने अमृत–वचनों से लोगों को शान्ति एवं आनन्द रस का पान करवाते हैं, जो ब्रह्मज्ञान के प्रकाश से उन्हें जागरूक करते हैं और जो मुमुक्षु–साधकों को अपने दयार्द्र हृदय से मोक्ष–पथ दर्शाते हैं, उनकी जय हो ! जय हो !

ज्ञानादित्यधियो ह्यनन्तसुखसिन्ध्वन्तर्बहिश्चैकता–
पानस्नानकृतः स्वतस्तु गलितानात्मान आत्मत्वतः।
लोकानुग्रहकाङ्क्षया भुवि नृधीयोग्यैकसत्कर्मिणः
सन्तः सन्ति वसन्तवद्धि गुरवस्तेभ्यो महद्भ्यो नमः ।।३

सन्त जन यद्यपि स्वयं ज्ञान के प्रकाशमान् सूर्यों की भाँति उद्भासित होते हुए आनन्द के असीम सागर में पान करते एवं स्नान करते हैं, उसके भीतर एवं बाहर समान रूप से विचरण करते हैं, यह जानते हुए कि सब–कुछ एक ही आत्म तत्त्व हैद्वद्भवे अद्वैत भाव से मुक्त होते हैं, तथापि करुणावश लोगों के मन की स्थिति के अनुसार उसके अनुकूल ढंग से उन्हें शिक्षण–प्रशिक्षण दे कर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहते हैं। ऐसे वसन्त ऋतु सदृश महान् सद्गुरुओं की जय हो ! जय हो!!

महाक्रियो ज्ञाननिधिः परिव्राड्
आत्मस्वरूपेण जगत्स्वरूपः ।
इति स्थितो लोकहिते स्तोऽयं
जीयाच्छिवानन्दगुरुर्गरीयान् ।।४।।

स्वामी शिवानन्द जी की जय हो ! सद्गुरु की, सर्वश्रेष्ठ संन्यासी की, ज्ञान के अक्षय सागर की जय हो! जो यह जानते हुए कि संसार का अस्तित्व उनके निज–स्वरूप के ही समान है, संसार के भले के लिए निरन्तर कार्यरत हैं, जो महान् कार्य करने वाले हैं, उनकी जय हो!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

भगवान् से निरन्तर प्रार्थना करते रहें। 'उनके' प्रति सम्पूर्ण हृदय से समर्पित हो जायें। जो निश्छल हृदय से प्रार्थना करता है, उसकी ओर भगवान् दौड़े आते हैं। यह एक सत्य है। जो सोचें, वही बोलें। 'उनके' संरक्षण में अपने को समर्पित कर दें। ***स्वामी चिदानन्द***

बुद्धिमान् बनिए

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

आपके वर्तमान ज्ञान तथा अनुभव आपको जीवन के आवश्यक महत्त्व से अवगत कराते तथा आपके मस्तिष्क के सम्मुख भावी उत्कर्ष की एक विशाल अवलोकावलि प्रस्तुत करते हैं। विश्व के समस्त व्यापारों के साथ कटुता की विद्यमानता इस बात की साक्षी है कि उन तक पहुँचने के सामान्य ढंग में कुछ-न-कुछ त्रुटि है। क्लेश, व्याधि तथा मृत्यु जीवन-योजना के महान् अभाव के सूचक हैं। धन्य है वह, जो अपनी ही परछाई के पीछे दौड़ता है! सांसारिक पदार्थों से आनन्द पाने का प्रयास अपनी परछाई के पीछे दौड़ने के समान है। नश्वर पदार्थों में आस्था रखना संसार की महान् भूल है। आकाश चला जायेगा। पृथ्वी चली जायेगी। सौर-मण्डल भी जाता रहेगा। फिर अस्थिर पदार्थों में, जो प्रतिभास मात्र हैं, आश्रय खोजना कितना अज्ञान है! आश्चर्य कि फिर भी आप बड़ी आशाएँ लिये उनके साथ चिपटे रहते हैं। परिणाम क्या होता है? निराशा और निरन्तर असन्तोष। असत् पदार्थ सच्चे आनन्द की पूर्ति नहीं कर सकते।

इस जगत् में आप क्या देखते और आशा करते हैं? महान् प्रभुत्व तथा आनन्द की प्राप्ति की अनन्त आकांक्षाएँ ही वास्तव में प्रशंसनीय हैं; किन्तु आपने अपनी समस्या के समुचित समाधान का ढंग नहीं सीखा है। आप तो भवनों का निर्माण करना चाहते हैं, मोटरगाड़ियाँ खरीदना चाहते हैं और बाग-बगीचे लगाना भी। किन्तु इन सबका परिणाम क्या होता है? आप इनसे सुख की प्राप्ति नहीं कर सकते। आप कामना करते जाते हैं और आपकी कामनाएँ बढ़ती जाती हैं।

इन असत् पदार्थों की प्रवंचना में न पड़ें। सच तो यह है कि आप न तो भवन बनाना चाहते हैं; न ही कार, न स्त्री और न सम्पत्ति को ही प्राप्त करना। आप चाहते हैं सुख, हर्ष, सन्तोष और परम आह्लादह्लह्लइनके अतिरिक्त और कुछ नहीं। पर सुख है कहाँ?

भला बनने से पहले सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। चरित्रहीन व्यक्ति कभी भी सही अर्थों में समृद्धिशाली नहीं बन सकता। सदाचार के बिना आनन्द और प्रसन्नता नहीं मिल सकती। आपको यह भली-भाँति मालूम होना चाहिए कि यहाँ की वस्तुओं में परस्पर ईश्वरीय सम्बन्ध है। अतः जब तक आप इस तथ्य को समझ नहीं लेते, इसे स्वीकार नहीं कर लेते तथा इसको जीवन में मान्यता नहीं दे देते, तब तक आनन्द की खोज में सफल भी नहीं हो सकते। जो सारभूत आध्यात्मिक आधारों के अवलम्बन पर दृढ़ नहीं, वह सौम्य, धर्मपरायण सच्चा योगी और सदाचारी नहीं बन सकता। जिस व्यक्ति में इन सद्गुणों का अभाव है, वह प्रसन्नता का अधिकारी नहीं बन सकता। परमात्मा शाश्वत आनन्द के निकेतन हैं। केवल उनकी भक्ति ही आपको सब दुःखों से बचा सकती है। यदि आप परमात्मा को भूल जाते हैं तो वास्तव में अपने मूल-स्रोत और घर से दूर होते जा रहे हैं; कँटीली झाड़ियों और शोक-सागर के मार्ग पर चल रहे हैं।

आप किसलिए चापलूसी और याचना करते हैं? आप तो समस्त सत्ताधीशों के परम प्रभु के राजसिंहासन के उत्तराधिकारी हैं। इधर-उधर भटक कर अपने को क्यों शोकाकुल बनाते हैं? क्या आप अभी तक मृग-तृष्णा के समान इन सांसारिक आनन्दों में निष्फल अन्वेषण से थक नहीं चुके? निद्रा से उठें। साहसी और उत्साही बनें। कायरता का परित्याग करें। सत्य और धर्म के साम्राज्य में भय कैसा! यहाँ का नियम तो आनन्द है। बुद्धिमान् बनें, प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

अपने वास्तविक आनन्द-निकेतन की ओर चलते चलें। संसार के मरुस्थल में आप काफी भ्रमण कर चुके। अब

सन्त-रूपी मरुद्यानों में विश्राम करें। संसार तो तप्त बालुका है, तृप्तिदायक जल नहीं। भ्रम का परित्याग करें। सन्तों से ज्ञान की प्राप्ति करें। सन्त आपका उद्धार करेंगे। वे आपको सहायता प्रदान करेंगे, आपका मार्ग-निदर्शन करेंगे और आपके लक्ष्य तक साथ-साथ चलेंगे। अन्धा व्यक्ति बिना किसी नेत्रधारी की सहायता के चल नहीं सकता। संसारी लोग शाश्वत सत्य के प्रति अन्धे हैं और केवल अज्ञानान्धकार में अपना मार्ग टटोल रहे हैं। केवल ऋषि और मुनि गण ही आपको सहायता प्रदान कर सकते हैं। उनकी शिक्षाओं का पालन करें। सदाचार का अभ्यास करें। अपने ध्येय को उच्च बनायें और उचित प्रयत्न करते जायें।

विश्व को सान्त्वना देने के लिए सन्तों का अस्तित्व मात्र ही पर्याप्त है। उनसे मिल कर त्राणतत्पर ज्ञान ग्रहण करें। 'प्रभु की आराधना सत्कर्मों द्वारा की जा सकती है'ह्वह्वइसका अनुभव कर अपने कर्तव्यों का सुचारु रूप से पालन करते हुए संसार में जीवन-यापन करें। 'पाँव आपके निस्सन्देह भूमि पर हों, किन्तु मस्तक गगन का चुम्बन करता रहे'ह्वह्वइतना उच्च हो आपका आदर्श।

अपने अन्दर देवत्व के लिए स्थान निश्चित कर लें। इसी स्थान से परमात्मा के महान् शासन के प्रतिपादन के लिए सच्ची लगन के साथ कर्मरत हो जायें।

(अनूदित)

कभी न भूलें

साधना के मार्ग में बाधाएँ आ जाया करती हैं। ये बाधाएँ आपको सबल और शक्तिशाली बनाती हैं। अतः बाधाओं का सामना डट कर करें। एक-एक कर उनको जीतें।

दश बार भले ही आप गिर जायें, किन्तु निराश न हों। सौ बार भी आपको ठोकर लगे, किन्तु हताश न हों। हजार बार भी आपको मुँह की खानी पड़े, किन्तु निराश न हों। सँभलें और उठें। अपने मार्ग पर वीरतापूर्वक बढ़ते चलें। जीवन की विफलताओं से सफलता का मार्ग सुगम बनता है और दुर्गम नदियों पर पुल बनते हैं।

अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें। प्रत्येक शब्द पर ध्यान दें। अश्लील, अशुद्ध और बुरी बातें कभी न बोलें। जिस बात से दूसरों के दिलों पर चोट पहुँचे, उसे मुख से निकालें ही नहीं।

बुरे विचारों को मन में घुसने ही न दें। यदि किसी प्रकार बुरे विचार मन में प्रवेश कर भी जायें तो उन्हें तुरन्त निकाल कर बाहर फेंक दें। अपने मन को पवित्र रखें। तभी आप बुरे विचारों से अप्रभावित रह पायेंगे।

अपनी प्रतिज्ञाओं के अटल पुजारी रहें, धीरतापूर्वक अपनी साधना में लगे रहें। वैराग्य और तीव्र लगन को स्फुरित करने के यत्न करते रहें।

व्यक्तिगत भावना का दमन करें। जो आपकी हानि करने पर तुले हैं, उनको क्षमा प्रदान करें। घृणा के बदले में प्रेम का दान दें। जो आपका बुरा करता है, उसे आप सदा भलाई से सम्मानित करें।

अपनी नीच बुद्धि की आज्ञा का घोर विरोध करें। अपनी देह को अपनी आज्ञाकारिणी दासी बना लें।

यदि आप साधना में उन्नति न भी कर रहे हों तो लगन न छोड़ें। लगे रहें और लगे ही रहें। धीरे-धीरे आप सफलता के निकट आते ही जायेंगे।

लगन के पक्के रहें और साधना में दिलचस्पी से काम लें। आपकी संकल्प-शक्ति को नवीन बल प्राप्त होगा। साधना में सावधानी से काम लेने से साधक को दैवी सहायता प्राप्त होने लगती है।

स्वामी शिवानन्द

प्रार्थना के धर्मदूत : श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

हममें से वे लोग जो ऐसी स्थिति में हैं कि न तो वे सेवा के क्षेत्र में हैं और न जिनको निष्काम सेवा का सुअवसर ही मिलता है, उनके सामने श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन का यह (प्रार्थना) एक ऐसा अल्प-परिचित पक्ष है जो प्रेरणा और महानता की सम्पदा से परिपूर्ण है। परहित हेतु गुप्त रूप से सतत प्रार्थना करना उनका अभ्यास है। जो लोग ठोस सेवा करने में अशक्त हैं, उन्हें सदैव, सर्वत्र, सभी अवसरों पर सबके हित के लिए प्रार्थना करनी ही चाहिए। सभी प्राणियों के हित एवं कल्याण के लिए प्रामाणिकता से प्रार्थना आरम्भ कर देनी चाहिए। जिनको सहायता की आवश्यकता है, उन सबकी हम अपनी निष्काम प्रेम की भावनाओं से रहस्यमय ढंग से सेवा कर सकते हैं। अपने-आपमें यह एक उत्कृष्ट सेवा है।

सेवा प्रेम का अभिव्यक्त स्वरूप है। व्यक्ति में विकसित यह असीम प्रेम विश्व-हित की दृढ़ सकारात्मक चाह से द्विगुणित होने पर प्रभावी एवं उच्च कोटि की सेवा का रूप धारण कर लेता है। स्वास्थ्य एवं सहयोग का हमारा ऐसा स्पन्दन ही सूक्ष्म तथापि अधिक सशक्त रूप से सामान्य हित-साधन करेगा।

स्वामी जी इसको अभ्यास में प्रतिदिन लाते थे। मैंने देखा था कि वे निरपवाद रूप से सबके लिए प्रार्थना करते थे। यदि वे किसी रुग्ण व्यक्ति को देखते, तो तत्क्षण उसकी स्वस्थता के लिए प्रार्थना करते थे। किसी की मृत्यु के शोक-समाचार को सुनते ही दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए वे तुरन्त प्रार्थना करते। युद्ध की समाप्ति के लिए तथा क्षुधा-पीड़ित जनता की राहत के लिए वे नित्य नियमित रूप से प्रार्थना करते थे। लँगड़ाते कुत्ते को देख कर प्रार्थना उनके हृदय से प्रस्फुटित हो उठती थी। उनकी उपस्थिति में किसी के पाँव से यदि चींटी कुचल जाती, तो तत्काल ही उनका हृदय मूक भाव से प्रार्थना करने लग जाता था।

किसी से अन्य व्यक्ति की अस्वस्थता का समाचार जानने पर स्वामी जी उस अपरिचित व्यक्ति के आरोग्य एवं स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करने लग जाते थे। जब कभी उनके अपने दो शिष्य परस्पर असहमत होने पर क्रोधावेश में कुछ अपशब्द कह बैठते, तो स्वामी जी बिना किसी को बताये उस दिन निराहार रह कर दोषी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने लग जाते। प्रार्थना करने का सतत अभ्यास उनके जीवन का इतना आधार बन गया कि वह स्वामी जी के अस्तित्व से अभिन्न हो गया।

स्वामी जी प्रार्थना में निष्कपटता और प्रामाणिकता के प्रति प्रबल आस्थावान् थे। एक बार एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था‘‘हाँ, प्रार्थना में अमित प्रभाव है। निष्कपटता से की गयी प्रार्थना सब-कुछ करने में समर्थ है। यह तुरन्त सुनी जाती है तथा तत्काल फलवती होती है। अपने नित्य-प्रति के संघर्षयुक्त जीवन में प्रार्थना करें तथा अपने लिए महान् प्रभाव की अनुभूति करें। प्रार्थना जिस ढंग से भी करना चाहें, करें। शिशुवत् सरल बनिए। निष्कपट बनिए। तभी आप सब-कुछ प्राप्त करेंगे।’’

उन्होंने अपने इसी जीवन में इसको प्रमाणित कर दिखाया है। मुझे इसमें किंचित् भी सन्देह नहीं है। स्वामी जी के पास देश-भर से आने वाले असंख्य पत्रों को पढ़ने का सौभाग्य मुझे मिला हुआ था। यह कहना अत्युक्ति न होगा कि भारत के कोने-कोने से लोग स्वामी जी से पत्र-व्यवहार करते थे। मैंने पाया कि स्वामी जी के पास प्रतिदिन आने वाले असंख्य पत्रों में किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने का निवेदन होता था। कभी किसी की रोग-मुक्ति के लिए, कभी

नव-विवाहित दम्पति की सुख-समृद्धि के लिए अथवा नवजात शिशु की मंगल-कामना के लिए निवेदन होता था। कोई पेचीदे कार्य में सफलता प्राप्त करने हेतु प्रार्थना के लिए अनुनय करता था। स्वामी जी द्वारा की गयी प्रार्थनाओं के रहस्यात्मक प्रभाव के प्रति कृतज्ञतापूर्ण प्रमाण-पत्र अनिच्छित होने पर भी आते रहते हैं।

इसे आप आत्म-विश्वास का फल कहिए या मनोचिकित्सा-सम्बन्धी नियम या कुछ भी कहिए, ठोस वास्तविकता तो यही है कि यह एक यथार्थ है। एक बार लगातार तीन दिन आवश्यक तीन टेलीग्राम आये। उन तीनों में मालाबार के फैरोकी (Feroke) निवासी गोपाल एम. नामक दीर्घकालीन रोगी की ओर से प्रार्थना के लिए विनय की गयी थी। ऐसी असंख्य घटनाएँ हैं जिनको देख कर संशय करने का साहस ही नहीं होता कि स्वामी जी का प्रार्थना-विषयक दृढ़ अभिमत उनके निजी अनुभवों और प्रयोगों पर आधारित है।

आज के जाग्रत युग में एक बौद्धिक एवं तार्किक व्यक्ति नियमित प्रार्थना करने के विलक्षण काल-व्यतिक्रम पर हँसे बिना नहीं रह सकेगा। यह उचित होगा कि व्यक्ति अपने-आपसे पूछे कि प्रार्थना के कट्टर व आस्थावान् समर्थक गान्धी जी को नवयुग का महान् विचारक कैसे माना जाता है? यदि प्रार्थना प्राचीन परिपाटी मात्र ही होती, तो गान्धी जी की विवेचनात्मक बुद्धि, जिसकी श्रेष्ठता प्रश्नातीत है, इसको निःसंकोच ठुकरा देती। जो प्रार्थना को तुच्छ एवं असंगत समझते हैं, उन्होंने कभी विचार ही नहीं किया कि प्रार्थना क्या है और कैसे क्रियाशील होती है?

पर-जनों के लिए प्रार्थना एक प्रकार से भलाई चाहने का उत्कट भाव है। सबकी भलाई के लिए निरन्तर चिन्तन करने का यह निःस्वार्थ भाव प्रार्थनापूर्ण हृदय में विशुद्ध प्रेम की धारा प्रवाहित करता है। विशुद्ध अहैतुकी प्रेम वस्तुतः स्वयं में ईश्वर है। प्रेम दिव्यता का सार-तत्त्व है। अतः आकाश-मण्डल में जिसके अन्तर्गत ब्रह्माण्ड का अस्तित्व है, प्रार्थना दिव्यता की धारा प्रवाहित करती है और जहाँ इसकी आवश्यकता पड़ती है, यह (तरंग) लहरी अपनी अनुग्रह-शक्ति से वहाँ पहुँच कर क्रियाशील होती है। विश्व के एक कोने के एक अँधेरे कक्ष की मेज पर बैठा हुआ व्यक्ति जब बटन दबा कर तत्काल अपना सन्देश सहस्रों मील दूर भेजने में समर्थ होता है, तब प्रार्थना के विधायक प्रभाव को सरलता से समझा जा सकता है। मानव में अन्तर्निहित मानसिक एवं अति-मानसिक शक्तियों को मानव-क्रियाओं के निर्धारण में सशक्त कारक के रूप में तेजी के साथ मान्य किया जा रहा है।

स्वामी जी इस दृढ़ विश्वास से इतने आपूरित थे कि कोई भी पर्यवेक्षक जान जायेगा कि उन्होंने प्रत्येक सम्भव कार्य और अवसर (प्रसंग) को प्रार्थना के कार्य से संयुक्त किया हुआ था। मैंने देखा है कि जो-कुछ उनके अपने द्वारा या उनके मार्ग-दर्शन से अन्यों द्वारा सम्पन्न होता है, उन सबका शुभारम्भ व उपसंहार प्रार्थना द्वारा ही होता है। यदि किसी कमरे का निर्माण हो रहा होता, तो सभी कर्मचारी नन्हें दीप के चारों ओर एकत्र हो कर पहले भगवद्-कीर्तन तथा प्रार्थना करते और तब कार्य प्रारम्भ करते थे। यदि किसी द्वारा प्रेषित संगमरमर की प्रतिमा पहुँचती, तो तुरन्त ही प्रार्थना की जाती थी।

साधुओं को दिये गये भोज के अवसर पर प्रार्थना भी उस समारोह का अभिन्न कार्यक्रम होता था। पैकेट और पत्रिकाओं को डाक में भेजने के लिए बाँधते और लपेटते समय स्वामी जी कर्मचारियों को बताते थे कि हाथों से कार्य करते हुए भगवद्-गुणगान करो। व्यर्थ की बातचीत मत करो। आश्रम में स्थित भजन हॉल में वे तथा उनके थोड़े से कार्यकर्ता एकत्रित हो कर सम्मिलित स्वर व लय में ईश्वर का नाम गाते थे। पुनः सान्ध्य वेला में गम्भीर मौन में विश्व-शान्ति के लिए विश्व-प्रार्थना की जाती थी।

(अनुवादक : श्री स्वामी अर्पणानन्द जी महाराज)

स्वामी शिवानन्द तथा आध्यात्मिक नवजागरण १

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

हमारा निवास-स्थल यह संसार भौतिक तत्त्व का एक घनीभूत पुंज माना गया है। यहाँ तक कि हमारे अपने शरीर यान्त्रिक नियमों से संचालित होने वाले भौतिक प्रकृति के अंश के रूप में देखे जाते हैं। यह यान्त्रिक नियम ही आज एकमात्र सत्य प्रतीत होता है। आज विशेषतः विज्ञान-जगत् में यह एक सामान्योक्ति हो गयी है कि जीवन अत्यन्त सुनिश्चित रूप में कार्य-कारण के उस सिद्धान्त द्वारा निर्धारित है, जो संसार की सम्पूर्ण परियोजना पर शासन करता है। हमें बताया जाता है कि सत्ता के भौतिक तत्त्व, प्राण एवं मनस् आदि क्षेत्रों में जिस भिन्नता की प्राप्ति की अपेक्षा की जाती है, वह सतही है तथा उनका विचार भौतिक तत्त्व के प्रकटीकरण एवं प्रसारण की सूक्ष्मता के क्रमिक स्तर के अनुसार होता है। यहाँ तक कि विज्ञान द्वारा परिकल्पित विश्व-यन्त्र के नियमों को चुनौती देती प्रतीत होने वाली मानव-शरीर की संघटना की व्याख्या भी, सभी वस्तुओं के आधारभूत उपादान, भौतिक तत्त्व की पाशविक शक्ति की विभिन्न-रूपी सक्रियता का एक रूप मात्र कह कर दी गयी है।

इस प्रकार के सिद्धान्त का प्राकृत परिणाम यह आश्चर्यजनक निष्कर्ष है कि विश्व के अन्य भौतिक उपादानों की भाँति मानव-जीवन पूर्णतया कार्य-कारण के विवेक-शून्य सिद्धान्तों से निर्धारित है एवं मानव की तथाकथित स्वतन्त्र इच्छा-शक्ति यदि केवल एक कपोल-कल्पना नहीं है, तो उनकी वशवर्तिनी ही है। हमारे यह प्रतिवाद करने पर कि मनुष्य मात्र भौतिक तत्त्व ही नहीं, अपितु मनस् भी हैद्वह्वयह समझाया जाता है कि मनस् भी भौतिक तत्त्व की शक्तियों के सूक्ष्म और वायव्य निस्रवण के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। मनुष्य के सुख-दुःख से उदासीन, निर्ममतापूर्वक अपने नियमों द्वारा कार्य करने वाली ब्रह्माण्ड की विराट् यन्त्रावली में मानव एक नगण्य कणिका के रूप में ह्रस्व हो गया है।

जीवन की यह प्रकृतिवादी व्याख्या, जिसके इस वैज्ञानिक तथा परमाणविक युग में शीघ्र ही निरंकुश हो उठने की आशंका है, वास्तव में सामान्य भोले-भाले श्रद्धालु व्यक्तियों तथा उन बुद्धिजीवी लोगों का दर्शन प्रतीत होती है, जिनमें मानव-अनुभूति की महत्तर गहराइयों की थाह लेने का न धैर्य है, न अवकाश है और न उसे समझने के साधन ही। स्थूल भौतिकवाद के इस सिद्धान्त के साथ-ही-साथ हैद्वह्वकम-से-कम प्रयास और चेष्टा-स्वरूप अधिकाधिक आराम और सुख-चैन की प्राप्ति की एक धुन तथा इस प्रकार की एक अन्तर्निष्ठ भावना कि पराकाष्ठा पर पहुँची भौतिक उन्नति ही अस्तित्व का चरम लक्ष्य होना चाहिए। इस सिद्धान्त की क्षमता और औचित्य में एक विवेकहीन विश्वास के कारण सांसारिक मनुष्य आज नैतिक मूल्यों की भ्रष्टता, मानसिक जीवन तथा वर्तमान शिक्षा-स्तर के पतन तथा जीवन के प्रति एक ऐसे दृष्टिकोण के कारण अपनी समृद्धि और भौतिक आधिपत्यों के होते हुए भी आत्मा की अशान्ति और एकरसता (ऊब) की अनुभूति को भूल गया हैद्वह्वऐसा प्रतीत होता है।

मानव निष्करुण जगत् के नियतिवादी यन्त्र का एक निरीह दन्त्रचक्र मात्र नहीं है, प्रत्युत् उसकी सत्ता सार्वभौम आत्मा का सह-विस्तारी एवं सह-शाश्वत आध्यात्मिक तत्त्व है। इस तथ्य को भौतिकवादियों द्वारा किये गये अत्यन्त असन्तोषजनक एवं प्रभावहीन प्रचार की प्रतिक्रिया के रूप में अनेकों ने सहज ही अनुभव किया था। मनुष्य भौतिक प्रकृति से आपूर्ण है, इस चरम सीमा तक पहुँची हुई भौतिकवादी धारणा की ओर से मुड़ कर निर्णायक तुला उस आदर्शवाद की दूसरी चरम सीमा की ओर झुक गयी जो प्रतिपादन करता है कि मनुष्य ब्रह्माण्डीय आध्यात्मिक तत्त्व की प्रेरणा से विवशतापूर्वक इस ओर खिंचता है।

इन भौतिकवादी तथा आदर्शवादी सिद्धान्तों का भेद अन्ततः विश्व की संरचना और चरम तत्त्व की संकल्पना में प्राप्त होता है। एक के अनुसार यह भौतिक तत्त्व गति और शक्ति है, दूसरे का दृढ़ मत है कि यह विशुद्ध मनस् अथवा आत्मा है; परन्तु दोनों ही यह स्वीकार करते हैं कि मनुष्य की अपनी कोई वास्तविक स्वतन्त्रता और विकल्प नहीं है, क्योंकि वह विश्व की चरम यथार्थता मेंह्वह्वचाहे वह भौतिक हो, मानसिक हो अथवा आध्यात्मिक होह्वह्वअविमोचनीय रूप से आवेष्टित, तन्मय और लीन है। अभागे मानव ने अनुभव किया कि ऐसी परिस्थिति में उसके लिए सौन्दर्यपरक, धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों के उपभोग का एक सामान्य जीवन व्यतीत करना तथा साथ-ही-साथ अपने चरणों को धरती माँ पर सुस्थापित अनुभव कर सकना कठिन थाह्वह्वउस समृद्धि, वैभव, प्रत्याशाओं, रहस्यों से युक्त धरती माँ पर जो आश्चर्यजनक निपुणता से मानव के ध्यान को आकृष्ट कर इंगित करती है कि जीवन निरन्तर सामना किये जाने वाले दृश्यमान संघर्ष, संकट और आपदाओं के होते हुए भी सत्य, शिव तथा सुन्दर है। फिर भी जीवन ही सब-कुछ नहीं है; दुःख, पीड़ा तथा मृत्यु के तत्त्व, संसार की अशान्ति, जीवन के भाग्याधीन उतार-चढ़ाव, मानव की अनन्त इच्छाओं तथा उसके अन्तर में उमड़ती नैतिक आकांक्षाओं के द्वारा निरन्तर निर्दिष्ट कोई भयोत्पादक एवं भीषण सत्य विद्यमान है। सांसारिक मनुष्य को आवश्यकता थी एक प्रेममय, सहानुभूतिपूर्ण, तर्कसंगत तथा सन्तोषजनक शिक्षा की, जो उसे व्यक्ति के रूप में अपने दैनिक कर्तव्यों का पालन करते हुए भी, उस अद्भुत तथा भव्य विश्वेतर के लिए आकांक्षा करते रहने की शक्ति दे जो उसे सदैव ही प्रकृति के लुब्ध करने वाले आवरणों से अपने पास बुलाने को इंगित करता प्रतीत होता है।

तीक्ष्ण बुद्धि लार्ड मैकाले द्वारा प्रस्तुत कुशल योजना के अन्तर्गत शिक्षित विकासमान युवकों के बहकाये हुए मन सरलता से पथ-भ्रष्ट हो सकते थे और जैसा कि आशा करना स्वाभाविक होगा, इन युवा व्यक्तियों के प्राचीन पूर्वजों के जीवन की पीढ़ियों से चलती आयी भव्यता और विद्वत्ता धीरे-धीरे लुप्त हो गयी तथा लोग आज के बहुचर्चित और लगभग चरमोत्कर्ष की अतिरंजित ऊँचाई तक उठाये गये तथाकथित आधुनिक चिन्तन, एक विचारशील दृष्टिकोण और जीवन के प्रति एक वैज्ञानिक मनोवृत्ति की लीक पकड़ कर चलने लगे। ऐसे अनेक व्यक्ति थे जो आध्यात्मिक सिद्धान्तों में सन्देह करने में तथा अतिभौतिक का खण्डन करने में आनन्दित होते थे तथा आत्मा और परमात्मा की निन्दा करने की सीमा तक भी पहुँच गये थे।

विदेशी शासकों द्वारा नियोजित विधि सचमुच जादू की तरह कारगर हुई। आश्चर्यजनक था कि किस प्रकार हमारा उष्णरक्तीय युवा समाज अपनी निशंक आँखों के सामने ही प्रस्तुत किये गये व्यावहारिक विज्ञान के मोह एवं औद्योगिक क्रान्ति की उपयोगिता से अभिभूत हो उठा। सर्वसाधारण नेह्वह्वअमर जीवन का गहनतम सत्य उद्घोषित करने के अधिकारी, अत्यधिक धार्मिक और आध्यात्मिक नायकों की क्रम-परम्परा की इन भोली-भाली सन्तानों ने अपने पूर्वजों की आध्यात्मिक विरासत को धीरे-धीरे त्याग कर, सगर्व एक ऐसी संस्कृति के अदृश्य जुए के नीचे इतराते हुए चलना आरम्भ किया जो उन पर गुप्त रूप से प्राप्त आधिपत्य की भावना से जुड़ी थी। साथ-ही-साथ सम्पूर्ण विश्व में, विशेष रूप से प्रथम विश्व-युद्ध के प्रभाव के उपरान्त एक सन्देहवादी दृष्टिकोण की प्रवृत्ति दिखायी पड़ी। बीसवीं शती के भौतिकी तथा प्राणिविज्ञान के आविष्कारों द्वारा लायी क्रान्तियों तथा साथ ही, प्रत्येक वस्तु में तर्क की जबरदस्त माँग ने संकेत किया कि वे समस्त अच्छाई, विश्वास, नैतिकता, धर्म और आध्यात्मिकता पर सांघातिक प्रहार करेंगे, चाहे इन चिरसम्मानित मूल्यों के प्रति रूढ़िवादी विचारधारा कुछ भी हो। ऐसी परिस्थिति की माँग थीह्वह्वसमस्त मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन तथा मानव के आन्तरिक जीवन का अपेक्षाकृत अधिक सदृढ़ आधार पर निर्माण। जीवन के राजनीति, समाजशास्त्र, धर्म, योग, अध्यात्म आदि प्रमुख क्षेत्रों में, भ्रान्त मनों को सुधारने तथा सत्य, ऋत और नैतिकता की आवश्यकताओं को स्वर देने के लिए अप्रतिरोध्य आन्तरिक न्याय के अनेक प्रभावशाली तथा विश्वसनीय स्वर तत्काल उभर पड़े।

श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती ऐसे अग्रणी मार्ग-दर्शकों में विशिष्ट स्थान रखते हैं जो आधुनिक भारत में पूर्ण आन्तरिक परिवर्तन लाये तथा जिन्होंने महान् आध्यात्मिक मूल्यों को एक सुदृढ़तर आधार पर समुचित प्रतिवेश में स्थापित किया।

(अनूदित)

शिवानन्द-विजय ४

''आपके अन्तर्तम में एक आवाज है जो कहती है : मैं शुद्ध चैतन्य ब्रह्म हूँ। इसे अब सुनें।''

श्री सुन्दरश्याम 'मुकुट'

अब तक का कथा-सार

अंक १, दृश्य ३

(ग्राम के विद्यार्थी खेल रहे हैं। बच्चों में परस्पर किंचित् झगड़ा हो जाता है। कुप्पुस्वामि मंच पर आते हैं तथा तुरन्त उनका झगड़ा निबटा देते हैं। उनकी आगे होने वाली बातचीत स्पष्ट संकेत देती है कि वह भविष्य में कैसे व्यक्तित्व में उभर कर आने वाले हैं। वह लड़कों को अत्यन्त बहुमूल्य शिक्षा देते हैं। अपनी आयु से कहीं अधिक ज्ञानवान् होना उनके शब्दों से ज्ञात होता है। वह उन्हें समझाते हुए कहते हैं कि यदि वे जीवन में सफलता पाना चाहते हैं तो परिश्रम करें।)

पात्र-परिचय

वेंगु अय्यर : अप्पय्य दीक्षितार के एक सुयोग्य वंशज

डा. कुप्पुस्वामि (श्री स्वामी शिवानन्द): इस नाटक के नायकह्वह्ववेंगु अय्यर के सुपुत्र, प्रथमतः एक चिकित्सक तथा बाद में मानव-जाति में जागरूकता लाने के लिए जीवन समर्पित करने वाले एक महान् सन्त।

पार्वती अम्माल : श्री स्वामी शिवानन्द जी की माता जी (वेंगु अय्यर की धर्मपत्नी)

पहला अंक

।। चौथा दृश्य।।

स्थानह्वह्वताम्रपर्णी नदी का तट।

समयह्वह्वप्रातःकाल।

(मेला लगा हुआ है। श्रद्धालुओं की अपार भीड़ है। कोई स्नान कर रहा है, कोई सूर्य को अर्घ्य दे रहा है, कोई नेत्र मूँदे हाथ में माला लिये भगवद्-भजन में मग्न है। चारों ओर कोलाहल-ही-कोलाहल है। एक सूरदास भिखारी गाते हुए आता है। पीछे-पीछे कुछ भीड़ है जो उसके गीत पर मुग्ध है। भीड़ में कुप्पुस्वामि भी हैं।)

(गीत)

जग मुझको ठुकराता है।
इस सूखी-सी ठठरी पर भी तू तरस नहीं खाता है।।

मैं चुप हो कर रह जाता हूँ,
फिर भी तुझ को सन्तोष नहीं।
दुतकार रहा है बार-बार
फिर भी मुझ को कुछ रोष नहीं।
इन गालों पर दो चपत लगा सच कह दे, क्या पाता है।

तू घी की चुपड़ी खाता है,
मैं दाने चार चबा लेता।
तू गाली लाख सुनाता है,
मैं लाखों मंगलवर देता।
अपने दिल में कुछ दया नहीं, निष्ठुर अब भी लाता है।

इन फटे-पुराने कपड़ों में,
अपना तन अरे छिपाता हूँ।

जाड़े में ठिठुर-ठिठुर कर मैं,
बे मौत यहाँ मर जाता हूँ।
तूने पूछा है कभी मुझे, मन रोता या गाता है।

(गीत समाप्त होता है। लोग भिखारी को पैसे दे कर चले जाते हैं। केवल कुप्पुस्वामि रह जाता है)

कुप्पुस्वामिह्वह्वबाबा! तुम इतने दुःखी क्यों हो?

भिखारीह्वह्वबेटा! हम भिखारियों का जन्म ही दुःखी रहने के लिए होता है। तुम क्यों पूछते हो?

कुप्पुस्वामिह्वह्वतुम्हें क्या चाहिए?

भिखारीह्वह्वऔर कुछ नहीं, केवल एक पैसा!

कुप्पुस्वामिह्वह्वएक पैसे से तुम्हारा क्या होगा?

भिखारीह्वह्वपेट की ज्वाला तो कुछ शान्त हो जायेगी। फिर देखो मेरे हाथ में कितने पैसे हैं।

कुप्पुस्वामिह्वह्वये तो बहुत कम हैं। तुम्हारे पास न तो पहनने के लिए वस्त्र हैं और न ओढ़ने के लिए कम्बल।

भिखारीह्वह्वहाँ, हैं तो नहीं; पर जीवन के दिन तो पूरे हो ही जाते हैं। जिस ईश्वर ने हमें जन्म दिया है, वही हमारी रक्षा भी करता है।

कुप्पुस्वामिह्वह्वतुम कहाँ रहते हो बाबा?

भिखारीह्वह्वभिखारियों के रहने की भी कोई जगह होती है बेटा! उनके लिए पृथ्वी की शरण और आकाश की छत्रछाया ही सब-कुछ है। वे जहाँ देखते हैं, अपने जीवन की रातें काट देते हैं। दिन इधर-उधर घूमने में बिता देते हैं। पर तुम्हें इससे मतलब?

कुप्पुस्वामिह्वह्वमेरे घर चलो। मैं तुम्हें वस्त्र दूँगा, भोजन दूँगा, फिर तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा। तुम सुख से वहीं रहना। क्यों, चलोगे न बाबा?

भिखारीह्वह्व(गर्दन हिलाते हुए) नहीं बेटा! तुम्हारे घर में हम लोगों के लिए स्थान नहीं। एक दिन वस्त्र दे सकते हो, एक दिन भोजन दे सकते हो, हमेशा नहीं। दर-दर की ठोकरें खाना ही हमारे भाग्य में लिखा है बेटा!

कुप्पुस्वामिह्वह्वक्या कहते हो! मैं तुम्हें जीवन-भर तक कहीं जाने नहीं दूँगा।

भिखारीह्वह्वजीवन-भर तक!

कुप्पुस्वामिह्वह्वहाँ।

भिखारीह्वह्व(स्नेह से) तुम रख सकते हो, तुम्हारे पिता जी नहीं!

कुप्पुस्वामिह्वह्वपिता जी, नहीं! यह मत कहो बाबा।

भिखारीह्वह्वठीक कहता हूँ बेटा!

कुप्पुस्वामिह्वह्वतुम यह कैसे जानते हो?

भिखारीह्वह्वतुम्हारे पिता जी को हमारी सीमा का ज्ञान है।

कुप्पुस्वामिह्वह्वसीमा कैसी बाबा?

भिखारीह्वह्वयह मत पूछो! भिखारियों की सीमा बड़ी विचित्र होती है, ऐसी विचित्र जिसमें केवल विषमता ही विषमता है। भिखारी जब रोते हैं तो संसार उन्हें ढोंगी पुकारता है, जब वे हँसते हैं तो संसार उन्हें चोर, डाकू, लुटेरे और न जाने क्या-क्या कह कर दुत्कारता है। फिर...ओह, मैं क्या कह गया! नहीं बेटा, मैं तुम्हारे घर नहीं जाऊँगा।

(नेपथ्य से) बेटा कुप्पु, कहाँ हो? चलो, घर चलें।

कुप्पुस्वामिह्वह्व(ऊँचे स्वर से) मैं यहाँ हूँ पिता जी!

(वेंगु अय्यर का प्रवेश)

वेंगु अय्यरह्वह्वयहाँ क्या कर रहे हो मेरे लाल?

कुप्पुस्वामिह्वह्व(भिखारी की ओर संकेत करके) पिता जी! ये बाबा बड़े दुःखी हैं, इन्हें घर ले चलिए।

वेंगु अय्यरह्वह्वघर ले चल कर क्या करेंगे? यहीं कुछ पैसे दे दो।

(जेब से चवन्नी निकाल कर भिखारी को देते हैं)

कुप्पुस्वामिह्वह्वनहीं, पिता जी! इतने से क्या होगा? देखिए, जाड़े से कितने ठिठुर रहे हैंह्वह्वकम्बल देंगे, भोजन देंगे। जैसे हम सुख से रहते हैं वैसे इन्हें भी रखेंगे, इनकी सेवा करेंगे। ले चलोगे न, पिता जी?

भिखारीह्वह्व(पैसे गाँठ में बाँधते हुए) बेटा! मेरे भाग्य में जो था, मिल गया। मेरी सीमा यहीं तक है। जाओ, तुम युग-युग जीओ। कहाँ तक अपने पिता जी से हठ करोगेह्वह्वमैं भिखारी हूँ और भिखारी ही रहूँगा।

(जाता है)

कुप्पुस्वामिह्वह्वबाबा...पिता जी!..

वेंगु अय्यरह्वह्व(आँखों में आँसू भर कर) पुत्र! तुम किस-किस पर दया करोगे! इस संसार में तो चारों ओर दीनता और भूख का साम्राज्य है। चलो, घर चलें।

(दोनों का प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

।। पाँचवाँ दृश्य।।

स्थानह्वह्वपूजा-भवन

(एक चौकी पर भगवान् का सिंहासन है, उसके पास दूसरी चौकी पर कुशा का आसन बिछा हुआ है जिस पर पार्वती अम्माल बैठी भजन गा रही है। वह भावमग्न है।)

(गीत)

नन्द के लाल दीन दयाल, दिल में तेरा ही प्यार है।
आया नहीं क्यों देर की, कब से मुझे इन्तजार है।।
नैया भँवर में है पड़ी, कौन उबारे आन कर।
पार लगा दे आज तू, मेरी यही पुकार है।।
आँखों में तू ही बस रहा, ध्यान में तू ही फँस रहा।
जाऊँ कहाँ मैं साँवरे, छोड़ तेरा दरबार है।।
जग का सहारा क्या करूँ, तेरा सहारा है मुझे।
भूल गया क्यों अब वही, मुझसे किया इकरार है।।
पतित जनों को तार कर, बैठा है मौन तू कहाँ।
या तो 'मुकुट' तू तार दे, कह दे या मेरी हार है।।

(वेंगु अय्यर का प्रवेश)

वेंगु अय्यरह्वह्ववाह, तुमने कितना सुन्दर गीत गाया। तुम्हारे प्रत्येक स्वर में नन्द के लाल को बुलाने की मधुर चाह भरी हुई है। तुम साक्षात् मीरा हो देवी।

(पार्वती अम्माल उठ कर अपने पति के चरण छूती है और एक ओर को खड़ी हो जाती है।)

वेंगु अय्यरह्वह्वमैं तुम्हें पा कर धन्य हो गया। भगवान्...

(सिंहासन की ओर देखते हैं)

पार्वतीह्वह्वस्वामि!

वेंगु अय्यरह्वह्वदेवी! यह अठारहवीं पीढ़ी है! (भेद-भरी दृष्टि से पार्वती अम्माल की ओर देखते हैं।)

पार्वतीह्वह्व(प्रश्न-भरे स्वर में) अठारहवीं पीढ़ी? आपका अभिप्राय नहीं समझी नाथ?

वेंगु अय्यरह्वह्वइस पीढ़ी में महापुरुष के अवतार लेने का वरदान है।

पार्वतीह्वह्ववरदान?

वेंगु अय्यरह्वह्वहाँ, प्रिये! यह वरदान हमारे वंशकुल-दीपक अप्पय्य स्वामी ने भगवान् शिव से प्राप्त किया था।

पार्वतीह्वह्व(आश्चर्य से) शिव से प्राप्त किया था? यह आप क्या कह रहे हैं?

वेंगु अय्यरह्वह्वहाँ! मैं ठीक कह रहा हूँ। क्यों शंका है?

पार्वतीह्वह्वशंका तो नहीं, आश्चर्य अवश्य है।

वेंगु अय्यरह्वह्वआश्चर्य! (हँसते हैं)

पार्वतीह्वह्वपर...

वेंगु अय्यरह्वह्वपर क्या, वह वरदान पूरा हो गया है।

पार्वतीह्वह्वकिस तरह स्वामि!

वेंगु अय्यरह्वह्वयही कि हमारे घर में महापुरुष ने जन्म लिया है।

पार्वतीह्वह्वजन्म लिया है?

वेंगु अय्यरह्वह्वहाँ, और तुम उसकी माँ हो।

पार्वतीह्वह्वपहेली बुझवा रहे हो क्या?

वेंगु अय्यरह्वह्वतुम मिथ्या समझ रही हो!

पार्वतीह्वह्वमैं तो कुछ भी समझ न सकी। आपका संकेत...

वेंगु अय्यरह्वह्वसंकेत! मेरा कुप्पु ही इस वरदान की पूर्ति है देवी! वह साधारण बालक नहीं, महापुरुष है।

पार्वतीह्वह्वउसमें आपने कौन-से लक्षण देख लिये नाथ?

वेंगु अय्यरह्वह्वलक्षण पूछती हो? सुनो, उसमें अभी से सेवा का भाव, दीन-दुःखियों पर दया, उनके प्रति सहानुभूति और भगवद्-भक्ति आदि श्रेष्ठ लक्षण स्पष्ट दिखलायी देते हैं। कल मैं उसे ताम्रपर्णी के मेले में ले गया था। वहाँ उसे एक भिखारी मिला। उसकी दीन दशा देख कर कुप्पु बड़ा दुःखी हुआ और घर चलने के लिए उस भिखारी से हठ करने लगा। मैंने उसे कहा कि बेटा इस भिखारी को कुछ पैसे दे कर अपने घर चलो, तुम उससे ऐसी हठ न करो। किन्तु वह न माना और मुझसे कहने लगाह्वह्व'पिता जी! बाबा को घर ले चलो। ये यहाँ जाड़े में ठिठुर-ठिठुर कर मर जायेंगे। हम इन्हें वस्त्र देंगे, भोजन देंगे और इनकी सेवा करेंगे।' मैंने उसकी बातों की उपेक्षा की और भिखारी को चवन्नी निकाल कर दी। भिखारी ले कर चला गया, किन्तु कुप्पु हतबुद्धि-सा खड़ा रहा, उसकी आँखों में आँसू आ गये और उदास मेरे साथ चला आया (आँखें डबडबा आती हैं)।

पार्वतीह्वह्व(गद्गद कण्ठ से) धन्य हो भगवान्... वास्तव में मेरी कोख सफल हो गयी।

वेंगु अय्यरह्वह्वहाँ, ऐसा ही है। चलो, विश्राम का समय हो गया है। (दोनों का प्रस्थान)

(पट-परिवर्तन)

(क्रमशः)

आपका वास्तविक अपरिवर्तनीय स्वरूप

आकांक्षा करें, खोजें, प्रवेश करें और स्थित हो जायें! सूक्ष्मतम से भी अधिक सूक्ष्म को जानने वाला शुद्ध चैतन्य है। वही आपका वास्तविक अपरिवर्तनीय स्वरूप है, यह अनिवार्य है, अमिश्रित प्रकृति वाला है, शुद्ध चैतन्य है और स्वरूप आत्मा है। वह ही आप वास्तव में हैं। एक बार यदि आपको इसका ज्ञान हो जाये, तो आप मुक्त हैं।

उस सर्वज्ञ की आकांक्षा करें। सर्वज्ञ की इच्छा करके उसे खोजें, उस सर्वज्ञ को खोज लेने पर उसी के स्वभाव में गहन प्रवेश कर जायें ! उस परम प्रशान्ति में गहरे उतर जायें! उस परम चैतन्य में गहन प्रवेश पा जाने पर, उस चैतन्य में सदा के लिए स्थिर हो जायें! उस चैतन्य में निवास करने से आपको शान्ति मिलेगी। इस प्रकार जो अवास्तविक को मात्र भ्रान्ति और क्षणिक मानते हुए उसे त्याग देता है और केवल वास्तविक में ही दृढ़ रहता है, वह उस सत्य में ही स्थित हो जाता है।

यही साधना हैह्वह्ववास्तविक पर दृढ़ रहना और क्षणिक असत्य को अस्वीकार करते रहना। बारम्बार, निरन्तर अपने सर्वदा आनन्दमय, सर्वदा शान्त स्वरूप को दृढ़ करते जायें और जब भी कभी मन की पुरानी आदत के अनुसार विपरीत विचार आने लगें, उन्हें अस्वीकार कर दें, वापस लौटा दें। विपरीत विचारों को स्थान न दें। परम अनुभूति के आकांक्षी, जिज्ञासु और मुमुक्षु का यही वास्तविक स्वरूप है।

यह सब अन्धकार से प्रकाश की ओर गमन है। वह परम सत्ता, समस्त अन्धकारों से परे, समस्त प्रकाशों का प्रकाश है। सभी दिव्य महान् आत्माओं ने अपनी साधना के द्वारा, सत्य पर दृढ़ रह कर और असत्य को अस्वीकार करके प्रबुद्धता और ज्ञान की प्राप्ति की। वे उस ज्ञान के प्रकाश से भर गये। वे प्रकाश के केन्द्र बन गये। ***स्वामी चिदानन्द***

बाल-स्तम्भ :

मोटी आंटी ४

स्वामी रामराज्यम्

(बच्चो, इस धारावाहिक कहानी में तुम पढ़ रहे हो मोटी आंटी के जीवन से जुड़े हुए कुछ प्रेरक प्रसंग। प्रत्येक प्रसंग एक मोती की तरह है, जो मन की पिटारी में सँभाल कर रखने योग्य है। इन मोतियों का धन तुम्हारी जीवन-यात्रा में बहुत काम आयेगा।)

४. 'अब मैं ही तेरे अब्बा हूँ'

मैं कई दिनों से देख रहा था कि मोटी आंटी के पास करीम के फोन बार-बार आते हैं। फोन पर बातें करते-करते मोटी आंटी उदास हो जाती थीं। एक दिन उन्होंने बतलाया कि करीम बीमार हो गया है। उसका इलाज चल रहा है।

दूसरे दिन करीम घर पर आया। उसके पूरे शरीर में सूजन थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। उसने बताया कि उसे दवाओं से कोई फायदा नहीं हो रहा है। मोटी आंटी ने उसे डा. अरुण के पास भेज दिया। तीन-चार घण्टों बाद वह लौट कर आया। बोलाह्वह्व''डाक्टर ने बताया है कि गुरदे खराब हो गये हैं। अब डाइलेसिस[१] होगी। गोलियों और इंजेक्शनों से फायदा नहीं होगा।'' मोटी आंटी ने कहाह्वह्व''तो क्या हुआ! भगवान् का नाम लेते रहो और कल से डा. अरुण का इलाज शुरू कर दो।''

कुछ महीनों के बाद एक दिन डा. अरुण करीम को ले कर मोटी आंटी के पास आये। कहने लगेह्वह्व''डाइलेसिस से कोई लाभ दिखलायी नहीं पड़ रहा है। अब एक ही रास्ता बचा हैह्वह्वकिडनी ट्रांसप्लांटेशन[२]।''

मोटी आंटी ने पूछाह्वह्व''तुम्हारे भारद्वाज हास्पिटल में किडनी ट्रांसप्लांटेशन हो जायेगा?''

''हो जायेगा, लेकिन कौन देगा अपना गुरदा?''

मोटी आंटी तपाक से बोलींह्वह्व''मैं दूँगी।''

''क्या कहती हो आंटी!'' डा. अरुण ने चौंकते हुए कहा।

तभी करीम बोल पड़ाह्वह्व''नहीं आंटी, मेरे लिए अपनी जान खतरे में न डालो।''

मोटी आंटी डा. अरुण से बोलींह्वह्व''यह शरीर सिर्फ खाने-पीने के लिए दिया है भगवान् ने? यह दूसरों के काम आने के लिए मिला है। जाओ, करीम को ले जा कर अपने हास्पिटल में भरती कर लो। मुझसे जब कहोगे, मैं आ जाऊँगी।''

डा. अरुण बोलेह्वह्व''अब तो आपको भी करीम के साथ चलना पड़ेगा। आपके शरीर की कुछ जाँचें होंगी। तब पता चल पायेगा कि आपका गुरदा लगाया जा सकता है कि नहीं।''

---

[१] एक इलाज जिससे खून में पाये जाने वाले टाक्सिन शरीर से बाहर निकाल दिये जाते हैं।

[२] किडनी ट्रांसप्लांटेशन का मतलब है पुराने खराब गुरदे को निकाल कर किसी दूसरे मनुष्य का स्वस्थ गुरदा लगाना।

इसके बाद कुछ दिनों तक मोटी आंटी के खून आदि की जाँचें चलती रहीं।

एक दिन डा. अरुण ने मोटी आंटी को बताया कि जाँचें पूरी हो गयी हैं और उनका गुरदा करीम के शरीर में लगाया जा सकता है। आपरेशन का दिन निश्चित हो गया। मोटी आंटीह्वह्वजो अपना गुरदा देने जा रही थीं और करीमह्वह्वजिसके शरीर में गुरदा लगाया जाने वाला थाह्वह्वदोनों का ही आपरेशन होना था।

आपरेशन के एक दिन पहले मुझे और गुल (जिसे करीम कुछ दिन पहले हमारे घर छोड़ गया था) को ले कर मोटी आंटी भारद्वाज हास्पिटल पहुँच गयीं। हम दोनों को डा. अरुण के घर में रहने के लिए भेज दिया गया। मोटी आंटी अस्पताल में भरती हो गयीं।

दूसरे दिन ओ. टी.[३] में जाने से पहले मोटी आंटी ने हम दोनों को बुला कर खूब प्यार किया। थोड़ी देर बाद करीम आया और रोने लगा। रोते-रोते बोलाह्वह्व''आप मेरे लिए इतना कुछ कर रही हैं। यह मैंने सोचा भी नहीं था। पता नहीं, कौन हैं आपह्वह्वइन्सान कि फरिश्ता।''

मोटी आंटी ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया।

तभी नर्स आयी और मोटी आंटी और करीमह्वह्वदोनों को ओ.टी. में लिवा ले गयी।

हम दोनों बच्चे डा. अरुण के घर चले आये। शाम को डा. अरुण आये और हम दोनों से बोलेह्वह्व''आंटी का आपरेशन हो गया है। उन्हें देखने चलोगे?''

हमें ले कर डा. अरुण मोटी आंटी के बेड के पास आये। बेड पर लेटे-लेटे मोटी आंटी ने डा. अरुण से पूछाह्वह्व''करीम कैसा है?''

डा. अरुण ने कहाह्वह्व''उसे अभी तक होश नहीं आया है। वह आई. सी. यू.[४] में है।''

दो दिन बाद तक करीम की दशा ठीक नहीं थी। उसे कभी होश आता था, कभी बेहोश हो जाता था। तीसरे दिन उसे होश आया। उसने पास खड़ी हुई गुल से पूछाह्वह्व''आंटी कैसी हैं?''

गुल ने कहाह्वह्व''अब्बा, वह लेटी हुई हैं।''

उसके बाद करीम फिर बेहोश हो गया।

शाम के समय डा. अरुण मोटी आंटी के पास आये। बोलेह्वह्व''करीम अभी भी आई. सी. यू. में है। वह एक घण्टे से होश में है। आप उससे मिलेंगी?''

मोटी आंटी बहुत कमजोर दिखलायी पड़ रही थीं। फिर भी उठ कर बैठ गयीं। बोलींह्वह्व''ह्वील चेयर[५] पर चल सकती हूँ।''

ह्वील चेयर पर जाती हुई आंटी के पीछे-पीछे हम दोनों बच्चे भी करीम के बेड के पास पहुँचे। उन्हें देख कर करीम खुश दिखलायी पड़ा। बोलाह्वह्व''कैसी हैं आंटी आप?''

मोटी आंटी ने कहाह्वह्व''तुम बताओ अपना हाल।''

करीम कुछ देर तक मोटी आंटी को देखता रहा। फिर बोलाह्वह्व''हालत ठीक नहीं है। पता नहीं, बचूँगा कि नहीं। आपका एहसान नहीं चुका पाया। जिन्दा रहूँगा, तो भी नहीं चुका पाऊँगा।''

मोटी आंटी चुप थीं।

फिर करीम ने गुल को इशारे से अपने पास बुलाया। गुल का एक हाथ हौले से पकड़ कर मोटी आंटी की ओर देखने लगा। आँखों में आसूँ भर आये। बोलाह्वह्व''आपको गुल सौंप रहा हूँ आंटी।''

[३]ओ. टी. अर्थात् आपरेशन थियेटर, जहाँ आपरेशन किया जाता है।

[४]वह कमरा जहाँ रोगी की विशेष देखभाल की जाती है।

[५]एक ऐसी कुरसी जिसमें पहिए लगे होते हैं।

ये करीम के अन्तिम शब्द थे।

अपने आँसू पोंछते हुए मोटी आंटी वापस अपने बेड पर आयीं। हम दोनों भी पीछे-पीछे पहुँचे। बेड पर बैठ कर मोटी आंटी ने रोती हुई गुल को अपनी ओर खींच लिया और उसके गालों पर हाथ रख कर भर्रायी आवाज में बोलींह्न ''गुल, अब मैं ही तेरे अब्बा हूँ।''

गुल मोटी आंटी की गोद में सिर छिपा कर जोर-जोर से रोने लगी। वह उसे थपकी देती रहीं और खुद भी रोती रहीं।

कुछ दिनों बाद मैं, गुल और मोटी आंटी अस्पताल से घर लौट आये।

कई दिनों तक मोटी आंटी बिलकुल नहीं हँसीं और बहुत कम बोलीं। गुल उनकी छाया की तरह उनके पीछे-पीछे लगी रही।

कुछ दिनों तक गुल उदास रही, लेकिन मोटी आंटी के दुलार ने उसे उदास नहीं रहने दिया।

गुल जिस घर को अपना घर मानती थी, अब वह उसी घर में मोटी आंटी के पास रह रही थी। वह अपने अब्बा के घर को भूल गयी। अपनी मोटी आंटी के प्यार की शीतल छाया में वह पलती रही, बढ़ती रही; हँसती रही, हँसाती रही।

(क्रमशः)

* * *

आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न सन्देश

डा. श्री टी. एम. पी. महादेवन, एम. ए., पी-एच. डी., मद्रास

परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी का सन्देश समस्त विश्व में अधिकाधिक उत्साहपूर्वक प्रसारित हो रहा है तथा उनकी शिक्षाओं से संसार भर से अधिक से अधिक संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। भारत को अपने सुविख्यात सन्त-मनीषियों पर गर्व है। वे एक अखण्ड शृंखलावत् लगातार इस धरा पर आते रहे हैं। ऐसे यशस्वी सच्चे जगद्गुरुओं में से ही स्वामी शिवानन्द जी हैं। अपनी असंख्य रचनाओं तथा आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न प्रवचनों द्वारा सद्गुणों एवं ज्ञान का मार्ग दिखला कर, उन्होंने असंख्य नर-नारियों को रूपान्तरित कर दिया है। वे अथक रूप से अपने समस्त दिव्य सद्गुणों (संगीत एवं चिकित्सीय सहित) को उपयोग में लाते हुए एक नूतन जगत्-निर्माण के कार्य में लगे हुए हैं। पूर्व और पश्चिम जगत् से भारी संख्या में भक्त जन उनके निर्देश प्राप्त करके आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश कर चुके हैं। अभी हाल ही की मेरी प्रशान्त क्षेत्र की यात्रा के दौरान मुझे शिवानन्द जी के भक्तों के एक समूह को हांग-कांग में मिलने का सुयोग प्राप्त हुआ। ऐसे समूहों की वृद्धि हो, यह समस्त विश्व के लिए ही बहुत अच्छा है। हमारी भगवान् से प्रार्थना है कि परम पूज्य स्वामी जी की संस्था सम्पूर्ण जगत् को आच्छादित कर ले!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

भगवान्

भगवान् प्रकाश हैं। 'वह' शाश्वत जीवन हैं। 'वह' प्रेम हैं। 'वह' एकमात्र सत्य हैं। एकमात्र 'उनकी' ही सत्ता है। 'उनके' अतिरिक्त शेष सब असत्य है। यह संसार एक अयथार्थ बाह्य दिखावा है। 'उन्हें' सम्पूर्ण हृदय से प्यार करें। 'वह' आपके परम मित्र हैं। **स्वामी चिदानन्द**

करुणा का मूर्तिमान् स्वरूप– शिव

परम पूज्य श्री स्वामी वेंकटेशानन्द जी महाराज

८ जनवरी १९५०

शिवानन्द जी की जय! रात्रि–सत्संग चल रहा था। गीता–पाठ इत्यादि के समय प्रयोग में लायी जाने वाली लालटेन की बत्ती धीमी करके एक ओर रख दिये जाने से भजन हॉल में लगभग अँधेरा–सा ही था। यद्यपि 'अखण्ड महामन्त्र कीर्तन वेदिका' के दोनों ओर दीपक प्रज्वलित थे; किन्तु वे तो दीपक जितना प्रकाश दे सकते हैं, उतना ही दे पा रहे थे और उस प्रकाश से हॉल का केवल तीसरा भाग ही आलोकित हो पा रहा था। प्रवेश–द्वार की ओर का स्थान तो लगभग अन्धकार में ही था।

इस अन्धकार–ग्रस्त प्रवेश–द्वार से एक अन्धकार–युक्त काली शक्ति ने प्रवेश किया। 'प्रकाश की विद्यमानता' में अँधेरे के आगमन की कौन कल्पना कर सकता था?

गोविन्दन हाथ में कुल्हाड़ी लिये शिव की ओर बढ़ा। प्रवेश–द्वार के निकट ही बैठे हुए शिव तक पहुँचने में उसे कुछ अधिक प्रयास नहीं करना पड़ा। क्या शिव, जो कि एक देदीप्यमान आध्यात्मिक सितारा हैं, प्रवेश–द्वार के निकट उस स्थान पर ही ठीक नहीं खड़े थे जहाँ साधक जन अपने अन्धकार को पीछे छोड़ते हुए दिव्य प्रकाश प्राप्ति के लिए आगे बढ़ता है? ये 'करुणा–सागर' ऐसे स्थान पर खड़े होने के जोखिम की किंचित् भी चिन्ता न करके वहीं खड़े रहना चाहते हैं जिससे कि जो लोग प्रकाश तक पहुँचने के लिए प्रयत्नशील हैं, वे पुनः कहीं अन्धकार में फिसल न जाएँ!

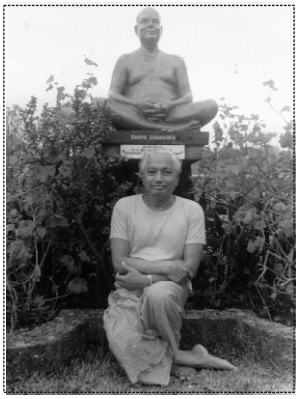

कुल्हाड़ी ऊपर उठी, देवलोक में देव गण कँपकँपा उठे; वायु व्याकुल हो कर भजन हॉल के बाहर सनसनाती हुई मानो ॐ की ध्वनि में चीत्कार उठी। और कुल्हाड़ी गिरी। इन्द्रदेव, गोविन्दन के हाथ के इष्टदेवता, काँप गयेह्वह्वऔर कुल्हाड़ी का निशाना चूक गया! जिस द्वार पर प्रहार ने आघात किया, (हे लकड़ी के द्वार धन्य हो तुम!) वह मानो सावधान करने के लिए चीख पड़ा।

गोविन्दन और घबरा गया। उसने पुनः कुल्हाड़ी उठायी। इस बार दीवार पर लगा हुआ चित्र बीच में आ गया और कुल्हाड़ी का प्रहार उस पर पड़ा। क्या उस अनन्त, सर्वव्यापक सत्ता से शिव ने स्वयं को एकीकार नहीं किया हुआ है? ''हाँ''ह्वह्वउस चित्र ने कहा और शिव के स्थान पर अपना शीश अर्पित कर दिया।

दोनों प्रहार निशाना चूक गये, केवल कुल्हाड़ी का लकड़ी

का हत्था शिव के शिर पर लगा। शीतकाल में अपने कुटीर से निकलते समय शिव कपड़े की पगड़ी पहन लिया करते हैं जिसे भजन हॉल में प्रवेश करते ही प्रायः उतार देते हैं। किन्तु आज वह भूल गये! भूल गये? हाँ, क्योंकि पगड़ी का वस्त्र उस पावन शिर से अलग होने को तैयार नहीं हुआ। अतः कुल्हाड़ी का हत्था शिव के शिर पर ढकी पगड़ी की तह पर ही लग सका।

अब शिव को आभास हुआ कि कोई उन पर आघात कर रहा है। उन्हें लगा कि सम्भवतया कोई डण्डे से उन्हें मार रहा है। उन्होंने हाथ ऊपर उठा कर कहा, ''क्या तुम्हारा काम हो गया? क्या तुम और मारना चाहते हो?'' उठे हुए हाथ पर कुल्हाड़ी ने स्पर्श किया और उसने हाथ की त्वचा पर खरोंच डाल दी। सम्भवतया कुल्हाड़ी ने सन्त के हाथ का चुम्बन लेने का सुअवसर छोड़ना नहीं चाहा।

शिव के निकट ही बैठे हुए विष्णु स्वामी जी झटके से उठे (वह एक कुशल हठ योगी हैं) और तेजी से गोविन्दन को बाहों में जकड़ लिया, इतने बलपूर्वक कि वह पुनः हाथ न हिला सका! विष्णु गोविन्दन को भजन हॉल से बाहर घसीट कर ले गये। भजन हॉल में बैठे लोगों को अब ज्ञात हुआ कि क्या हुआ है, एक-दो व्यक्तियों ने उठ कर गोविन्दन के हाथ-पाँव बाँधने में सहायता की। और गोविन्दन को वहाँ से हटा लिया गया।

ऐसी घटनाओं में प्रायः जैसा होता है, एक-दो लोग उस आक्रमणकारी के ऊपर झपट पड़े और उसकी पिटाई आरम्भ कर दी। पद्मनाभन जी, जो कि उस समय यज्ञशाला में थे, को भीड़ के शोर से भी ऊची आवाज में गुरुदेव की आवाज सुनायी दी, ''ओह! उसे मत मारो! मत मारो उसे!!'' पद्मनाभन जी नहीं जानते थे कि भजन हॉल में क्या हुआ है। जब उन्होंने देखा कि गोविन्दन धरती पर लोट रहा है और कुछ लोग उसे मार रहे हैं तथा शिव चिल्ला रहे हैं, ''उसे मत मारो!'' तो उन्होंने गोविन्दन को छुड़ाया और निकट के ही कक्ष में बन्द करके ताला लगा दिया।

''कीर्तन जारी रखें'', शिव ने कहा और कीर्तन, आरती, शान्ति-पाठ सभी कुछ किया गया तथा सत्संग समाप्त हुआ।

शाश्वतानन्द जी इसी बीच भागते हुए 'डायमण्ड जुबली हॉल' पहुँचे और भजन हॉल की घटना हमें उखड़ी आवाज में सुनायी। हम पुलिस चौकी की ओर दौड़े और कुछेक पुलिस के सिपाहियों को साथ लिये भजन हॉल पहुँचे। उखड़े हुए श्वास से जैसे ही हम भजन हॉल के निकट पहुँचे तो सुनायी दिया :

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत।

मैंने सुख की साँस ली। निश्चय हो गया था कि शिव पूर्णतया ठीक हैं। नहीं तो शान्ति-मन्त्र की ध्वनि नहीं आ सकती थी। ऐसे 'शाश्वत शान्ति युक्त' सन्त के समक्ष ही शान्ति-पाठ बोला जा सकता है जो इतनी बड़ी घटना को इस प्रकार एक ओर झटक सकता है मानो कुछ हुआ ही न हो।

मैं शीघ्रता से भजन हॉल के भीतर पहुँचा। गुरुदेव के दर्शन हुए। मेरे हृदय पर छाये दुःख के बादल छँटने लगे। ''आह, अन्ततः वे ठीक हैं।'' मात्र एक ही विचार था। समस्त दुःख दूर हो गया। शिव पूर्णतया निरापद हैं। यह तो प्रसन्नता की बात थी कि शिव पूर्णतया स्वस्थ हैं, किन्तु ऐसा भी कोई व्यक्ति संसार में हो सकता है जो ऐसा करने की सोचता हो जैसा गोविन्दन ने किया, यह विचार मन को अवसादग्रस्त कर रहा था। अतः सुख और अवसाद की मिली-जुली भावना सभी के हृदयों को मथ रही थी।

* * *

शिव की रक्षा स्वयं भगवान् कर रहे हैं, यह निश्चित है, आज की घटना ने यह सिद्ध कर दिया! गोविन्दन प्रातः से ही शिव की प्रतीक्षा में था, उसे ज्ञात था कि प्रायः शिव अपने कुटीर से अकेले ही भजन हॉल में आते हैं। उस समय वे

पूर्णतया असुरक्षित होंगे। घातक के लिए उस समय काम करना सुगम होगा। किन्तु उस दिन शिव प्रातःकालीन कक्षा के लिए आये ही नहीं। वे कभी कक्षा छोड़ते नहीं थे। हम सभी चकित थे। मुझे चिन्ता उनके स्वास्थ्य की हुई। वे ठीक थे, पर नहीं आये। गोविन्दन ने उनकी प्रतीक्षा में भजन हॉल की कई परिक्रमाएँ कीं। गोविन्दन तो प्रातः कभी ९ बजे से पहले नहीं उठता था। उस दिन, बस केवल उसी दिन उसने प्रातःकालीन सत्संग में भाग लिया और कीर्तन भी किया; यद्यपि उसे यह सुअवसर उसके भीतर बैठे शैतान ने ही दिया था।

रात्रि में भी, शिव ने सदा की भाँति पगड़ी उतार दी होती; उन्हें स्वयं भी नहीं पता कि उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया। बस यों ही नहीं उतारी। और इस घटना के पीछे भी गहन अर्थ निहित था।

गोविन्दन ने द्वार तथा शिव के मध्य के अन्तर का पूर्णतया अनुमान लगा कर कुल्हाड़ी का वार किया था, किन्तु वह भजन हॉल के द्वार के आगे बढ़े हिस्से का अनुमान लगाना भूल गया था! जब प्रथम प्रहार ठीक नहीं बैठा, तब उसे अपनी भूल का पता चला; किन्तु जब वह अन्तर कम करने के लिए दूसरी बार आगे बढ़ा तो कुल्हाड़ी को पुनः ठीक करना भूल गया, अतः दूसरी बार भी वार सही नहीं बैठा।

यह सब घटना–क्रम सिद्ध करता है कि शिव की रक्षा स्वयं भगवान् कर रहे थे।

* * *

भजन हॉल से हम सब उस कक्ष की ओर गये जहाँ गोविन्दन को बन्द किया हुआ था। शीघ्रता से उसके पैरों से बँधी रस्सी को खोला गया। उसको खड़ा किया गया, दोनों ओर से उसे पुलिस कर्मियों ने कस कर पकड़ रखा था। भीड़ खड़ी हुई उत्सुक नेत्रों से देख रही थी, शिव सीधे गोविन्दन के सामने गये और दोनों हाथ जोड़ कर झुके, पुलिस इन्सपेक्टर आश्चर्यचकित था, ''गोविन्द स्वामी जी! क्या आप अभी कुछ और मारना चाहते हैं? मैं आपके सामने खड़ा हूँ, कृपया आप अपनी सन्तुष्टि कर लें।'' गोविन्दन फुसफुसाते हुए बोला, ''नहीं, मैं अब आपको और मारना नहीं चाहता, मैं सन्तुष्ट हूँ।'' सभी के चेहरे बता रहे थे कि उसके इन शब्दों ने कैसे उनकी उस क्रोधाग्नि में घी डालने का कार्य किया है, जिसे वह कठिनाई से रोक रखने का प्रयत्न कर रहे थे।

''मैंने आपकी क्या हानि की है? आप मुझ पर इतना क्रोधित क्यों हैं?'' शिव ने प्रेमपूर्वक पूछा। कोई उत्तर नहीं । तब हम सब वहाँ से नीचे शिव कुटीर की ओर चल पड़े।

''स्वामी जी, हमारे लिए क्या आज्ञा है? क्या इस व्यक्ति के विरुद्ध शिकायत लिखूँ?'' पुलिस इन्सपेक्टर ने पूछा। ''न, न, उसे मुनिकीरेती से दूर भेज दें, बस इतना ही काफी है।'' शिव ने कहा। उनके दिव्य प्रेम की अथाह गहराई का अनुमान कोई लगा सकता है क्या? कोई व्यक्ति उनकी हत्या करने का प्रयत्न करता है और उन्होंने उसी क्षण उसे क्षमा कर दिया! यीशु के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा न कर सकता।

अब शिव वापस अपने कुटीर में पहुँचे, जहाँ इस रात्रि के समय लोगों की अनन्त भीड़ उनके दर्शनार्थ एकत्रित हो चुकी थी। आस–पास के अनेकों नर–नारियाँ सुख–दुःख के मिश्रित भाव से आँखों से अश्रुपात करने लगे थे, किन्तु शिव शान्त और उज्ज्वल मुस्कराहटपूर्ण मुद्रा में बैठे थे।

वृद्ध अचिन्त्यानन्द जी अपनी छड़ी के सहारे भागते हुए शिव के घावों की मरहमपट्टी हेतु पहुँच गये थे।

* * *

९ जनवरी १९५०

स्वामी शिवानन्द जी की जय! यह निश्चित किया गया कि गोविन्दन के साथ दो आदमी आश्रम से भेजे जायें, जो उसे उसके जन्म–स्थान सलेम की गाड़ी ग्रैंड ट्रंक एक्सप्रेस में टिकट सहित बैठा कर आयें।

गोविन्दन को सजा दिलाने के सम्बन्ध में कोई राय तक सुनने को शिव तैयार नहीं थे। ''न, न, हमें उसको सज़ा नहीं दिलानी चाहिए। उसने तो मेरे प्रारब्ध–कर्म भुगताने का कार्य किया है। आप क्या यह कहना चाहते हैं कि उसे परमात्मा की

इच्छा के बिना कुछ हो सकता है? नहीं, नहीं, यह तो भगवान् की इच्छा थी। उन्होंने ही गोविन्दन को ऐसा करने को कहा। क्या **'द्यूतं छलयतामस्मि'** तथा **'तस्करानां पतये'** केवल शब्द मात्र हैं! क्या वही सर्वव्यापक प्रभु चोर, डाकू, हत्यारे और लुटेरे में विद्यमान नहीं है? न, न, मैं गोविन्दन को पुलिस द्वारा दण्ड नहीं दिलवाने दूँगा। मेरे प्रारब्ध-कर्म इतनी सुगमता से निबटा देने के लिए हमें उसको धन्यवाद देना चाहिए। भगवान् ने मेरे जीवन की रक्षा इसलिए कर दी कि उन्होंने इस शरीर से अभी और सेवा करवानी है, मुझे अपनी वह सेवा करते रहना चाहिए, इस घटना से मैंने यही अर्थ निकाला है।''

दिन में ११ बजे के लगभग शिव फल, पुस्तकें (फिलासफी एवं योगा कविता रूप में, तथा कुछ पुस्तिकाएँ इत्यादि), वस्त्र, एक नया कम्बल और जप-माला ले कर पुलिस चौकी गये। स्वयं अपने हाथ से उन्होंने गोविन्दन के मस्तक पर कुंकुम एवं विभूति लगायी और उसे प्रणाम किया। विष्णुदत्त शास्त्री जी तथा अन्य सभी यह दृश्य देख कर स्तब्ध रह गये। फिर शिव ने अपने हस्ताक्षरों सहित यह लिख कर पुस्तकें उसे आशीर्वाद सहित दीं, ''परमात्मा आपको दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य, शान्ति, समृद्धि, भक्ति, ज्ञान और कैवल्य प्रदान करें!''

गोविन्दन को उन्होंने अष्टाक्षरी मन्त्र से दीक्षित किया, जप-माला दी तथा यह उपदेश दिया, ''कृपया सतत भगवन्नाम स्मरण करें। नियमित रूप से तीव्र जप करें। जो-कुछ हुआ, उसे भूल जायें। केवल इतना ध्यान रखें कि मन पुनः पुराने मार्ग की ओर न जाये तथा आपको पुनः वैसी गलती करने को बाधित न करे। कृपया अच्छी आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ें; बुरे लोगों से मित्रता न करें। साधना द्वारा सोयी पड़ी आध्यात्मिकता जागरूक एवं सुदृढ़ हो जायेगी। अभी तो वह आपके भीतर सुप्तावस्था में है, यदि वह न होती तो आप यहाँ आये ही न होते। मैंने शाश्वत स्वामी जी को तथा पुरुषोत्तम जी को कह दिया है, वह आपके साथ आगरा तक जायेंगे तथा आपकी यात्रा में आपकी सुविधा का पूरा ध्यान रखेंगे। आगरा से आपको आगे सेलम का टिकट दिला देंगे। सेलम पहुँचते ही कृपया अपने कुशलपूर्वक पहुँचने की सूचना मुझे लिख भेजिएगा। बीच-बीच में अपनी कुशलता एवं साधना के सम्बन्ध में भी सूचित करते रहें। भगवद्-कृपा आप पर हो!''

तब उन्होंने कई बार 'ॐ नमो नारायणाय' का जप किया तथा गोविन्दन से भी करवाया। विशेष खाद्य-सामग्री यथा रसम् इत्यादि तैयार करवा के गोविन्दन को जाने से पूर्व साथ दी गयी। उसके उपरान्त शिव ने पुलिस इन्सपेक्टर को लिख कर भेजा कि वे गोविन्दन के विरुद्ध किसी भी प्रकार से कुछ करने के इच्छुक नहीं हैं तथा पुलिस को भी यह घटना विस्मृत कर देनी चाहिए।

सायंकाल में भजन हॉल में शिव के लिए धन्यवाद प्रार्थना तथा दीर्घायु के लिए प्रार्थना की गयी। इसे स्वर्गाश्रम के एक अवकाश प्राप्त जज, श्री गौरीप्रसाद जी ने आयोजित किया था। समस्त उपस्थित जनसमूह ने मिल कर महामन्त्र-गान किया तथा महामृत्युंजय-मन्त्र की तरंगों से भजन हॉल का वातावरण ओत-प्रोत हो गया। फिर शिव ने अपने हाथों से सबको प्रसाद दिया।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

बहुलता और समृद्धि के द्वार खोलने का उपाय

दें, दें और निरन्तर दें। देने में प्रेम की भावना का प्रदर्शन होता है। देने से हृदय विशाल होता है और मन साफ होता है। बदले में पुरस्कार की भावना नहीं होनी चाहिए और न अहसान की चाह ही। जहाँ देने के लिए हाथ खुले नहीं है, वहाँ परमात्मा के लिए स्थान ही कहाँ रहा! देने से बहुलता और समृद्धि के द्वार खुलते हैं।

स्वामी शिवानन्द

मूर्तिमान् साधुत्व

श्रीमती हैन्ना हर्रमान, स्विटज़रलैंड

भगवान् की कृपा तथा गुरु के माध्यम से उनके किये जाने वाले कार्यों को एक सच्चे एवं निष्ठावान् शिष्य के लिए अभिव्यक्त कर सकना अत्यन्त कठिन होगा।

आप सन्तरे के रस अथवा अनन्नास की सुगन्धि का आनन्द तो भलीभाँति ले सकते हैं, किन्तु क्या जिसने कभी भी इनको चखा न हो, उसको इसके बार में समझा सकते हैं? अतः आवश्यकता के इस समय मेंह्वह्वगुरुदेव को, अपने विश्व भर में व्याप्त शिष्यों के प्रति देने वाले सतत प्रेम और निर्देशन को बताने का अधूरा प्रयास करने की अपेक्षा, मैं आज उनके 'जन्मदिवस-मेज़' पर एक अन्य ऐसा उपहार प्रस्तुत करना अधिक अच्छा समझती हूँ जो स्वयं को सीधे गुरुदेव के हृदय से निःसृत भव्य प्रभामण्डल में परिणित कर ले! क्योंकि, जैसा कि यीशु ने भी कहा है, ''वस्तुतः इससे बढ़ कर महान् प्रेम अन्य कुछ नहीं हो सकता कि व्यक्ति अपने बन्धुजनों के लिए स्वयं अपना जीवन ही दे दे।''

पिछले इन कई सप्ताहों से मैं स्वयं से निरन्तर पूछती रही हूँ, गुरुदेव के ७१ वें जन्मदिवस पर, उन्हें समर्पित करने के लिए सर्वोच्च उपहार क्या हो सकता है? क्या उनके 'दिव्य लक्ष्य' के प्रति अपने जीवन, अपने अस्तित्व को ही दे देना; मानवता के लिए अपने हृदय, मन और हाथों को दे देना, पूर्णतया समर्पित कर देना, सर्वोच्च उपहार नहीं होगा? यह सिद्ध कर देगा कि हमने स्वामी जी के सन्देश को समझा है तथा हम उनके उदाहरण का अनुसरण कर रहे हैं।

गुरुदेव की निजी 'मैं' किंचित् भी नहीं है। वे हमारे साथ और हमारे भीतर, हम सबके भीतर जीते हैं, हमारी प्रसन्नताएँ और उन्नति उनकी है, हमारी गलतियाँ और उनके परिणाम भी उनके हैं, हमारे साथ वे भी आनन्दित होते हैं। किन्तु वे उतनी ही शीघ्रता और गहराई से हमारी आशंकाओं और प्रलोभनों को जान लेते हैं, जितना की हमारे पीछे फिसल जाने को, तथा वे हमारे भार और हमारे दोषों को स्वयं सँभाल लेते हैं। सभी महान् देवदूतों ने संसार के कष्टों को अपने ऊपर झेला है, किन्तु विजयी-नायकों की भाँति, इसकी आवश्यकता, और इसके उद्देश्य को समझते हुए तथा इसमें विजयी होने को जानते हुए झेला है।

स्वामी जी की अनवरत करुणा एवं अक्षय-ज्ञान, उनका संवेदनशीलप्रेम एवं क्षमाशीलता तथा उनका अनन्त धैर्य एवं आत्मविश्वास वस्तुतः दिव्य कृपा का सतत प्रमाण है; और ऐसा ही हम सबको बनना चाहिएह्वह्वयीशु के कथनानुसार कहें तो, ''Fisher Folk of men'' अर्थात् प्राणी मात्र के रक्षक। हमारा जीवन जीने का ढंगह्वह्वगुरुदेव के समानह्वह्वहमारे बन्धुजनों के लिए एक सतत प्रार्थना और प्रेरणा बन जाना चाहिए कि उन्होंने कैसे जीवन जीना और कार्य करना है:ह्वह्वप्रेम पूर्वक सेवा करना, घृणा के बदले प्रेम देना, मिथ्यावादियों के प्रति सद्भावना रखना, हृदय के अन्तरतम तक सच्चा, ईमानदार एवं निष्ठावान् होना और सदा ऐसा ही रहना, भले ही हमारा चतुर्दिक् झूठ से आच्छादित हो तथा हमारी नैतिकता अन्धकार ग्रस्त हो।

संसार में हमारे जीवन जीने के ढंग सेह्वह्वहमारी विनम्रता और सादगी से; सांसारिक रूढ़िवादियों एवं सम्बन्धों के प्रति हमारी स्वतन्त्रता से; हमारी विनीत प्रसन्नता और हमारी प्रशान्तता से; तथा हमारा इच्छाओं, माँगों, क्षतिपूर्तिओं एवं प्रतिशोध की भावना से रहित होने सेह्वह्वलोगों को निश्चित रूप से प्रभावित और प्रेरित होना चाहिए। तब सम्भव है कि कुछ लोग तो एक ईर्ष्यात्मक एवं घृणात्मक उत्तेजना के भाव से ग्रस्त हो जाएँ तथा उसी के अनुसार प्रतिक्रिया भी करें, जब कि अन्य लोग अपने बन्धनों एवं विपत्तियों के प्रति जागरूक

और साथ ही उनसे स्वतन्त्र होने की एक ऊर्ध्वगामी दिव्य आकांक्षा से भर जाएँ!

हमें 'ईश्वर की सन्तानों' के शरीर सम्बन्धी बन्धनों से तथा आधुनिक जीवन की कही जाने वाली सैकड़ों ''आवश्यकताओं'' से मुक्ति दिलाने का; तथा जातिगत, राष्ट्रगत, सामाजिकस्तरगत और धर्मगत स्वार्थपरता एवं अलगावपन की भावना से स्वतन्त्रता दिलाने का, अपने निजी व्यवहार द्वारा निश्चित रूप से सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए। भगवान् की महिमा की देदीप्यमानता हमारी आँखों में से, तथा हमारे समस्त आचरण द्वारा, दीप्तिमान् होनी चाहिए। यीशु कहते हैं, ''किन्तु महानतम और उदात्त प्रेम तो वह है, जब चरवाहा अपना जीवन ही अपनी भेड़ों के लिए बलिदान कर देता है।'' क्यों? क्योंकि मानवजीवन, यह शरीर, जो कि सर्वाधिक मूल्यवान् भौतिक-निधि है, को स्वेच्छापूर्वक न्योछावर कर देने में, आत्मसमर्पण तथा ईश्वर के प्रति गहनतम प्रेम एवं गहनतम ईश्वरानुभूति का भाव अन्तर्निहित है। मानव, यहाँ तक कि आदिमानव भी अपने सहजज्ञान एवं आवेगशीलता से इसे जानते हैं, यही कारण है कि अपने बन्धुजनों के लिए निजी जीवन बलिदान कर देना एक ऐसा तथ्य है जो मानव मात्र की अन्तरात्मा तक गहरे उतर जाने की सामर्थ्य रखता है। प्रेम के इस शुद्धतम स्वरूप को देखने से, व्यक्ति भगवान् के सत्य स्वरूप के प्रति, उनकी शक्ति एवं प्रेम के प्रति जागरूक हो जाता है; क्योंकि उनकी शक्ति एवं प्रेम के कारण ही ऐसा बलिदान सम्भव हो सकता है। भगवान् के इन महान् सन्देशवाहकों, इन देवदूतों में से ऐसे बहुत से हैं जिन्होंने किसी न किसी अवसर पर शरीर को न्योच्छावर कर देने की परीक्षा का सामना किया है। वे अपनी भौतिक सत्ता को त्यागने के लिए तैयार थे और इस प्रकार उन्होंने अपनी आज्ञाकारिता, अपना विश्वास और अपनी शरीर की आसक्ति से स्वतन्त्रता सिद्ध कर दी। इस प्रकार उन्होंने केवल भगवान् के होने की, इस अनश्वर सत्ता के होने की घोषणा ही नहीं की प्रत्युत साथ ही जो उन्हें मार देना चाहते थे, अथवा वास्तव में ही मृत्यु का कारण भी बने, उन्हें भी समझा और क्षमा भी कर दिया। यीशुमसीह इस दिव्य भावना का शाश्वत प्रतीक हैं। क्रॉस पर लटकने का कष्ट झेलते हुए और अन्तिम श्वास लेते हुए उन्होंने उन लोगों के लिए क्षमा-प्रार्थना की जो इसका कारण बने थे।

मैंने श्री स्वामी वेंकटेशानन्द जी द्वारा लिखा हुआ गुरुदेव पर ८ जनवरी १९५० को किये जाने वाले आक्रमण का मन को झकझोर देने वाला वर्णन पढ़ा है। इस ८ नम्बर ने मुझे व्याकुल कर दियाह्लह्वयह स्वामी जी के जन्म दिन का अंक है, और इस दिन यह सब हुआ? पादरेणु के वर्णन ने मुझे अत्यन्त गहनता से जकड़ लिया। यह मेरे मन-मस्तिष्क में अनवरत छाया रहा। मैं पूरी घटना को इतने स्पष्ट रूप में घटते हुए मानो सामने देख रही थी, कि स्वयं को इससे दूर नहीं कर पा रही थी। स्वामी जी ः ह्व यीशुमसीह; गोविन्दन ः ह्व जूडास। दिव्यता की अपूर्व विजय; अनन्त प्रेम तथा परिपूर्ण सौन्दर्य अपने सर्वोच्च निखार में!

अब मुझे समझ आ गया कि स्वामी जी के 'जन्मदिवस-मेज़' पर प्रस्तुत करने वाला उपहार क्या था। मुझे स्वामी जी के इस रात्रिकालीन परीक्षण तथा परमात्मा की अद्भुत सुरक्षा एवं सहायता का पूर्णरूपेण जर्मन भाषा में अनुवाद करना होगा। यह उन सब तक पहुँचाया जायेगा जिनका ज्ञान जर्मन-भाषा तक ही सीमित है। उन्हें ज्ञात होगाह्लह्वस्वामी जी के जीवन की इस घटना द्वाराह्लह्वकि स्वामी जी भगवान् के अतिरिक्त और कौन हैं? तथा यह भी कि भगवान् की अनन्त कृपा और अथाह प्रेम, किस प्रकार एक जीवन्मुक्त मानव द्वारा अभिव्यक्त होता है।

वह प्रेम और करुणा प्रत्येक मानव-हृदय को जकड़ लेती है, और केवल इसी के द्वारा ही स्वार्थपरायण, अलग-थलग तथा अप्रसन्न मानवता का रूपान्तरण किया जा सकता है।

हे गुरुदेव! आपके शिष्यों की कृतज्ञता, श्रद्धा, भक्ति तथा प्रेममयी सेवा आपके जन्मदिवस के पुष्पित फूलहार हों! तथा यह आने वाले अनेकों वर्षों तक फलें फूलें!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

आप अपने अनुसार चलें

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

परम दिव्य सत्ता को श्रद्धापूर्वक प्रणाम है, उस शाश्वत और अनन्त परम आत्मा को, अनादि और अनन्त को, अबद्ध और असीम को, पूर्ण सत्, पूर्ण चित् और पूर्णानन्द को, उस सर्वातीत को प्रणाम है जिसे प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति समस्त दुःखों, कष्टों और तकलीफों से मुक्त हो जाता है, परम आनन्द को अनुभव करता है और सदा के लिए उसी आनन्द में स्थित हो जाता है।

इस सर्वोच्च अनुभव को प्राप्त करने की तीव्र आकांक्षा अर्थात् मुमुक्षुत्व की, इस महान् आनन्द को अनुभव करने की हमारे पूर्वजों ने अत्यधिक प्रशंसा की है, गुणगान किया है। यह मुमुक्षुत्व कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसे अन्य असंख्य इच्छाओं के साथ एक और इच्छा के रूप में मन में जोड़ लिया जाये। यह किसी वस्तु को प्राप्त कर लेने की इच्छा जैसा नहीं है, क्योंकि ईश्वर द्वारा रचित समस्त वस्तुओं को प्राप्त करने की इच्छा को त्याग देने पर ही व्यक्ति इस महान् अनुभूति को प्राप्त कर सकने की योग्यता पाता है।

अतः यह तो वास्तव में प्रत्येक वस्तु का पूर्णतया त्याग है, जैसा सर्वोच्च त्याग राजकुमार सिद्धार्थ ने तपस्वी बन कर किया था, जैसा सर्वोच्च त्याग राजा भर्तृहरि ने किया, राजा गोपीचन्द ने किया। उनके पास वह सब-कुछ था जो राजाओं को प्राप्त होता है, उन्होंने राज्यों पर शासन किया, किन्तु उन्हें ज्ञान हो गया कि ईश्वर ने उन्हें यहाँ पर परम अनुभूति की उपलब्धि के लिए भेजा है, कि भगवान् ने उन्हें इसीलिए मानव-जीवन प्रदान किया है।

और उन्होंने कहाह्लह्व''हम अपने इस कार्य द्वारा ईश्वरेच्छा को पूर्ण करेंगे; हम अन्य सब-कुछ त्याग देंगे।'' और भगवान् ने उन्हें सब-कुछ दे दिया। संसार जो-कुछ दे सकता था, उसे त्याग देने पर उन्हें वह प्राप्त हुआ जो कभी समाप्त होने वाला नहींह्लह्वअतुलनीय आनन्द, अनुमानातीत शान्ति, सर्वोत्कृष्ट जीवन, शाश्वत जीवन!

अतः परमात्मा की खोज के प्रश्न को इस दृष्टि से देखना और समझना चाहिए। यह संसार से उस प्रकार नकारात्मक रूप से मुख मोड़ लेने जैसा नहीं है, जैसा कि बहुत से लोग दोषारोपण करेंगेह्लह्वतुम संसार से मुँह मोड़ रहे हो, भाग रहे हो, तुम इसकी उपेक्षा कर रहे हो, और सैकड़ों चीजें हैं जो इससे अधिक महत्त्वपूर्ण और आवश्यक हैं; यह ईश्वर की इच्छा के विपरीत है, इत्यादि-इत्यादि। जो इस प्रकार सोचते हैं, वे यह नहीं जानते कि यह त्याग वास्तव में ईश्वर की परम इच्छा को पूर्ण करना है।

इसलिए, आलोचना तो सदा ही रहेगी। आप संसार को बदल नहीं सकते। आप संसार के सीमित संकुचित दृष्टिकोण और विचारशैली को परिवर्तित नहीं कर सकते। अतः उन्हें रहने दें। ईश्वर उनका भला करे! आप अपने अनुसार चलें। देवता प्रसन्न होंगे। भगवान् स्वयं आपके कार्यों को समर्थन करेंगे। वे आप पर कृपा-वृष्टि करेंगे। यह सत्य है।

इसलिए हम सर्वशक्तिमान् भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि हमें शक्ति और साहस दें, स्पष्ट दृष्टि और दृढ़संकल्पता दें कि ईश्वर-साक्षात्कार के इस भव्य पथ का अनुसरण कर सकें। गुरुदेव के ज्ञानोपदेश हमें इस महान् अनुभूति को प्राप्त करने में सहायता दें! ईश्वर आप सबकी सहायता करें!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

मुख्यालय आश्रम में विद्यार्थियों के लिए ३ दिवसीय आध्यात्मिक एवं व्यक्तित्व विकास शिविर

मुख्यालय आश्रम में ४ से ६ दिसम्बर २०११ तक विद्यार्थियों के लिए एक त्रि-दिवसीय आध्यात्मिक एवं व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित किया गया। इसमें ऋषिकेश तथा आस-पास के विभिन्न १४ शिक्षा-संस्थानों में से ८ वीं से १२ वीं कक्षाओं तक के कुल ८९ विद्यार्थी भाग लेने के लिए आये तथा इनके साथ कुल ८ अध्यापक भी आये। शिविर 'स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन' में किया गया।

४ दिसम्बर को उद्घाटन दिवस पर कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रार्थनाओं से तथा उसके उपरान्त मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज के आशीर्वचनों से हुआ। फिर मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने दीप प्रज्वलित करके शिविर का उद्घाटन किया।

प्रतिदिन शिविर में दो सत्र रखे गये थे; पूर्वाह्न सत्र में श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज विधिनायक (मास्टर ऑफ सेरेमनीज़) का कार्यभार सँभालते थे तथा अपराह्न में श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज विधिनायक का कार्य सँभालते थे। शिविर की गतिविधियाँ विद्यार्थियों में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को उत्पन्न करने तथा उनके शरीर-स्वास्थ्य में सुधार लाने की दृष्टि से आयोजित की गयी थीं।

तीनों दिन पूर्वाह्न सत्र का प्रारम्भ श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज द्वारा निर्देशित योगासन एवं प्राणायाम कक्षा से किया जाता था। उसके उपरान्त श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने साधना तत्त्व पर प्रवचन तथा ध्यान सम्बन्धी निर्देश प्रथम दो दिन दिये तथा तीसरे दिन परम पूज्य श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज ने 'जीवन में वास्तविक सफलता' पर प्रवचन दिया। शिविर के प्रथम एवं तृतीय दिवस पर श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज की कहानियों की तथा विश्व प्रार्थना गान की कक्षा विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त रुचिकर रही। द्वितीय दिवस परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने कर्मयोग पर अत्यन्त प्रेरणाप्रद प्रवचन दिया। प्रो. आई. डी. जोशी जी, डा. सुनील थपलियाल जी, श्री रामकृष्ण पोखरियाल जी तथा श्री वासुदेव चमोली जी के निर्देशन में पूर्वाह्न सत्र में खेलकूद एवं स्काउटिंग की गतिविधियाँ भी एक मनोरंजक विशेषता रही। पूर्वाह्न सत्र के तीनों दिन सत्र की समाप्ति श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज के श्रीमद्भगवद्गीता पर प्रेरणाप्रद प्रवचनों से हुई।

अपराह्न सत्र का प्रारम्भ प्रत्येक दिन विद्यार्थियों के कार्यक्रम से हुआ जिसमें उन्होंने भजन, कहानियाँ, पहेलिकाएँ एवं चुटकुले इत्यादि प्रस्तुत किये। इस विलक्षण कार्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों की छिपी हुई विलक्षणताएँ उभर कर सामने आयीं। इसके उपरान्त शिविर के प्रथम दो दिन श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज ने सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के महिमामय जीवन तथा उनके वैश्व उपदेशों पर प्रवचन दिये। दो सत्र प्रश्नोत्तरी के हुए जिसमें परम पूज्य श्री

स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने अलग-अलग दिन उत्तर दिये। विद्यार्थियों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक इनमें भाग लिया। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को आश्रम के सभी पावन मन्दिरों के दर्शनों के लिए भी ले जाया गया।

समापन सत्र में परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज द्वारा आशीर्वचन हुए। प्रमाण-पत्र, ज्ञान-प्रसाद तथा प्रसाद-वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। सद्गुरुदेव के पावन धाम में आयोजित किये गये इस शिविर में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थी स्वयं को अत्यधिक आशीर्वादित हुआ अनुभव कर रहे थे।

परम पिता परमात्मा तथा सद्गुरुदेव के आशीर्वाद सभी पर हों!

महामन्त्र-संकीर्तन-यज्ञ की ६८ वीं जयन्ती का कार्यक्रम

कलेर्दोषनिधे राजन्नस्ति ह्येको महान् गुणः।
कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसंगः परं व्रजेत्।।

(हे परीक्षित! यद्यपि कलियुग अगणित अवगुणों का भण्डार है, तो भी उसमें एक विशेष गुण है। कलियुग में व्यक्ति यदि केवल भगवान् श्री कृष्ण की महिमा का गुणगान करता है, तो वह समस्त आसक्तियों से छूट कर परब्रह्म को प्राप्त कर सकता है।)

भगवन्नाम-कीर्तन के महत्त्व को बतलाते हुए सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज कहते हैंह्न

''परमात्म-साक्षात्कार के लिए संकीर्तन सुगमतम, सुनिश्चित एवं शीघ्रतम साधन है।''

परम पावन महामन्त्र-संकीर्तन-यज्ञ की ६९ वीं जयन्ती मुख्यालय आश्रम में ३ दिसम्बर २०११ को अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लासपूर्वक मनायी गयी।

महोत्सव की भूमिका के रूप में २७ नवम्बर से २ दिसम्बर २०११ तक प्रतिदिन ३ घण्टे सामूहिक महामन्त्र संकीर्तन किया जाता रहा। ३ दिसम्बर के विशेष शुभ-दिवस को प्रातः ९ से ११ बजे तक दिव्य नाम मन्दिर में विशेष सत्संग एवं पूजा सम्पन्न की गयी। आश्रम यज्ञशाला में विश्व-शान्ति एवं मानव-कल्याण हेतु विशेष यज्ञ भी किया गया। अपराह्न ३.३० बजे एक सुसज्जित पालकी में भगवान् श्री राम, श्री कृष्ण तथा सद्गुरुदेव के चित्रों सहित नगर-संकीर्तन किया गया, जो आश्रम के भजन हॉल से कैलासगेट तक जा कर आया। पताकाएँ तथा महामन्त्र लिखित झण्डे भी साथ लिये हुए थे तथा महामन्त्र-गान से मुनिकीरेती का समस्त वातावरण आध्यात्मिक लहरियोंह्न से तरंगित हो उठा था। नगर-संकीर्तन से लौटने पर भजन हॉल में अष्टोत्तरशतनामावलि सहित भगवान् श्री राम एवं श्री कृष्ण की पुष्पार्चना की गयी। आरती एवं प्रसाद-वितरण से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

रात्रि-सत्संग में दैनिक पाठ तथा प्रार्थनाओं के अतिरिक्त परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने 'कलियुग में महामन्त्र-संकीर्तन की अवर्णनीय महिमा' के सम्बन्ध में प्रेरणाप्रद प्रवचन दिया। इस महान् दिवस पर दो पुस्तकों का विमोचन किया गया।

भगवान् श्री राम, भगवान् श्री कृष्ण तथा सद्गुरुदेव हम सबको दिव्य नाम के सतत स्मरण से आशीर्वादित करें!

मन की शुद्धता निःस्वार्थ सेवा, प्रार्थना और उपासना से अर्जित की जाती है। भगवन्नाम का सतत स्मरण करते रहें।

स्वामी चिदानन्द

मुख्यालय आश्रम में गीता-जयन्ती समारोह

मलनिर्मोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने।
सकृद्गीताम्भसि स्नानं संसारमलनाशनम्।।

(जल से किये जाने वाला दैनिक स्नान लोगों के शारीरिक मल को दूर करता है; किन्तु गीता-रूपी जल में एक ही बार स्नान करने से संसार के मल का नाश हो जाता है।)

दिव्य सद्ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता का पावन जन्म-जयन्ती दिवस, मुख्यालय आश्रम में ६ दिसम्बर २०११ को अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साहपूर्वक मनाया गया। पुनीत समाधि हाल में प्रातः ९ से ११.३० बजे तक एक विशेष सत्संग आयोजित किया गया, जिसमें आश्रम के सभी संन्यासी, ब्रह्मचारी तथा अतिथियों ने इस दिव्य गीत के सम्पूर्ण अठारह अध्यायों का सामूहिक पाठ किया। उसके उपरान्त भगवान् श्री कृष्ण के वेदी में सुसज्जित चित्र की अष्टोत्तरशतनामावलि सहित पुष्पार्चना की गयी। आरती तथा पावन प्रसाद-वितरण सहित कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ। इस पवित्र दिवस के उपलक्ष्य में आश्रम-यज्ञशाला में विश्व-कल्याण एवं शान्ति के लिए गीता के श्लोक के गान सहित यज्ञ भी किया गया।

रात्रि-सत्संग में सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का गीता-जयन्ती पर दिया गया एक अत्यन्त प्रेरणाप्रद एवं आत्मोत्थापक प्रवचन परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने पढ़ कर सुनाया। योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी के प्रो. श्री सुब्बा राव जी ने गीता के सन्देश तथा गुरुदेव के बीस आध्यात्मिक उपदेशों में परस्पर सम्बन्ध बैठाते हुए प्रबोधन दिया। इस पावन अवसर पर दो अँगरेजी तथा एक हिन्दी की पुस्तक का विमोचन भी किया गया। आरती एवं प्रसाद-वितरण सहित सत्संग समाप्त हुआ।

भगवान् श्री कृष्ण तथा सद्गुरुदेव के आशीर्वाद हम सब पर हों कि हम गीता की भावना से जीवन जी सकें!

मुख्यालय आश्रम में श्री दत्तात्रेय जयन्ती का उत्सव

जगदुत्पत्तिकर्त्रे च स्थितिसंहारहेतवे।
भवपाशविमुक्ताय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते।।

(उन दत्तात्रेय भगवान् की हम वन्दना करते हैं जो संसार की रचना, पालन और संहार करते हैं तथा जो अपने भक्तों को संसार-चक्र के बन्धन से मुक्ति दिलाते हैं।)

मुख्यालय आश्रम में १० दिसम्बर २०११ को श्री दत्तात्रेय जयन्ती का पावन दिवस अत्यन्त भक्तिपूर्वक मनाया गया। दत्तात्रेय पर्वत शिखर पर प्रातः ९ से ११.३० बजे तक एक विशेष सत्संग आयोजित किया गया जिसमें सुन्दर ढंग से सुसज्जित दत्तात्रेय मन्दिर में भगवान् दत्तात्रेय के विग्रह की वैदिक मन्त्रोच्चारण सहित अभिषेक एवं अर्चना द्वारा भव्य पूजा की गयी। अवधूत गुरु के पावन-चरणों में उनकी महिमा वर्णन करते हुए सुमधुर भजन-कीर्तन भी किया गया। आरती तथा पावन-प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ।

चन्द्रग्रहण के कारण एक विशेष सत्संग सायंकाल ६ से रात्रि १०.३० बजे तक आयोजित किया गया था, जिसमें नियमित दैनिक पारायणों के अतिरिक्त आश्रम के संन्यासियों एवं ब्रह्मचारियों द्वारा अत्यन्त सुमधुर भावपूर्ण भजन-कीर्तन का कार्यक्रम हुआ। इस पावन दिवस पर सद्गुरुदेव की दो पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

दत्तात्रेय भगवान् तथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की कृपा सब पर हो!

प्रथम 'एकमासीय योग-प्रमाणपत्र कोर्स' का समापन समारोह

प्रथम 'एकमासीय योग-प्रमाणपत्र कोर्स' का समापन समारोह ३० नवम्बर २०११ को योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी के वाचनालय में सम्पन्न किया गया। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष, अपनी सम्मान्य उपस्थिति द्वारा कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे।

प्रारम्भिक प्रार्थनाओं के उपरान्त एकाडेमी के कुल-सचिव श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने सभी उपस्थित श्रोताओं का हार्दिक स्वागत किया। फिर श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज ने कोर्स की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उसके उपरान्त विद्यार्थियों ने अपने अनुभव व्यक्त किये। फिर प्रमाणपत्र तथा ज्ञान-प्रसाद विद्यार्थियों को दिया गया तथा प्राध्यापक वर्ग को सम्मानित किया गया।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने अपने विदाई-सम्बोधन में विद्यार्थियों को नित्य योगासनों का अभ्यास करने तथा अपना प्राप्त किया ज्ञान दूसरों के साथ बाँटने के लिए प्रेरित किया। माँ सरस्वती पूजन एवं प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ। परम पिता परमात्मा तथा सद्गुरुदेव की कृपा-वृष्टि सब पर हो!

वर्ष २०११-२०१२ में शैक्षिक-सहायता

''प्रार्थना करने वाले ओष्ठों से, देने वाले हाथ अधिक पावन हैं।''

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

इस उक्ति को हृदय में लिये हुए, सद्गुरुदेव ने निर्धन एवं जरूरतमन्द बच्चों को शिक्षा का प्रकाश प्रदान करने के लिए दिव्य जीवन संघ के कार्यों एवं उद्देश्यों में शैक्षिक सहायता का प्रावधान रखा। संघ के प्रारम्भ से ही स्थानीय एवं आस-पास के पर्वतीय क्षेत्र के निर्धन बालकों को प्राथमिक शिक्षा से स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षा के लिए सहायता दी जाती रही है।

वर्ष २०११-१२ के दौरान ३७,६८,७००/- (सैंतीस लाख अड़सठ हजार सात सौ) की धनराशि तीन हजार एक सौ चालीस विद्यार्थियों की प्रथम कक्षा से स्नातकोत्तर तक की शिक्षा हेतु ऋषिकेश की विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं को दी गयी।

मुख्यालय आश्रम में निःशुल्क हृदय-परीक्षण शिविर

महतां बहुमानेन दीनानामनुकम्पया।
मैत्र्या चैवात्मतुल्येषु यमेन नियमेन च।।

(सन्त-हृदय व्यक्तियों की पूजा के द्वारा, दीन-दुःखियों के प्रति सहानुभूति एवं दयापूर्ण व्यवहार के द्वारा, अपने जैसों के प्रति मैत्रिपूर्ण व्यवहार के द्वारा तथा यम और नियमों का पालन करने के द्वारा व्यक्ति तीनों गुणों से अतीत हो कर परमात्म-साक्षात्कार कर सकता है।)

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय ने ऋषिकेश के रोगग्रस्त निर्धन बन्धुओं की सहायतार्थ १० दिसम्बर, २०११ को 'भारत हार्ट इन्स्टीच्यूट, देहरादून' के सहयोग से एक निःशुल्क हृदय-परीक्षण शिविर आयोजित किया।

शिवानन्दनगर तथा आस-पास के क्षेत्र के कुल ४५ लोगों का शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय में 'भारत हार्ट इन्स्टीच्यूट' के डा. चेतन शर्मा (एम. डी. मेडिसन तथा डी. एम. हृदय रोग) एवं उनके साथी चिकित्सकों ने परिक्षण किया। हृदय-रोग की जाँच हेतु अन्य विभिन्न परीक्षण जैसे रक्त-मधुमेह (ब्लड-शुगर), उच्च रक्तचाप तथा ई. सी. जी. इत्यादि भी किये गये तथा दवाइयाँ भी बतायी गयी। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय द्वारा डा. चेतन शर्मा तथा उनके साथी चिकित्सकों एवं पैरामैडिकल स्टाफ तथा शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय के स्टाफ को उनकी समर्पित सेवाओंह्न के लिए तथा शिविर आयोजित करने के लिए सराहना सहित धन्यवाद किया जाता है।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा की कृपा तथा सद्गुरुदेव के आशीर्वाद सब पर हों!

अहमदाबाद में अमृत–पर्व

१९५० में सद्गुरुदेव की ऐतिहासिक अखिल भारत यात्रा के समय अहमदाबाद आगमन के स्मरणोत्सव के रूप में दिव्य जीवन संघ, अहमदाबाद शाखा द्वारा ४ से ६ नवम्बर २०११ तक अमृत–पर्व मनाया गया। मुख्यालय आश्रम के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, महासचिव, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज (न्यासी), श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज (सचिव) तथा श्री स्वामी आशुतोषानन्द जी महाराज (सुरेन्द्रनगर से) इस सम्मेलन की शोभावृद्धि हेतु पधारे। प्रत्येक दिन कुल ४ सत्र होते थे जिनमें विविध गतिविधियों यथा प्रार्थना, स्तोत्र पाठ, आत्मोत्थापक भजन–गायन प्रेरणाप्रद प्रवचनों का समावेश रहा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यन्त भलीभाँति आयोजित किया गया था तथा श्रोताओं ने भी उदाहरणीय अनुशासन एवं समुचित रुचि और उत्साहपूर्वक समस्त गतिविधियों में भाग

लिया। समापन समारोह में प्रत्येक प्रतिनिधि को प्रसाद ग्रहण करते समय सभी स्वामीजीओं के विशेष दर्शनों का लाभ प्राप्त

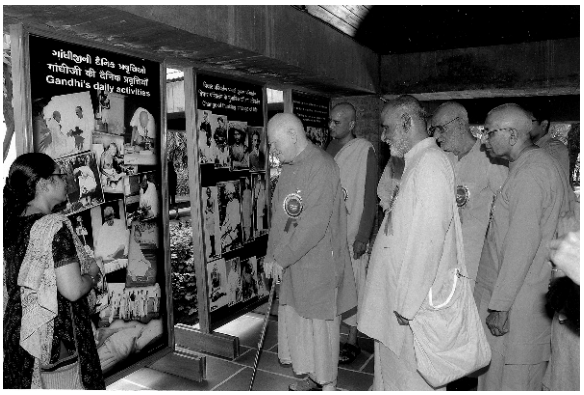

हुआ तथा बहुतों ने इस त्रिदिवसीय 'अमृत–पर्व' में वास्तविक 'अमृत' प्राप्त करने की अनुभूति अभिव्यक्त करते हुए इसकी दिव्य स्मृति को 'आजीवन–स्मरणीय' बताया।

समारोह से पहले, ३ नवम्बर को शाखा द्वारा परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज को 'अक्षरधाम' गान्धीनगर दिखाने का कार्यक्रम आयोजित किया गया। अक्षरधाम के वरिष्ठ स्वामीजीओं ने अतिथियों का सम्मान करते हुए विधिवत् पारम्परिक हार्दिकस्वागत किया तथा भारी संख्या में आये हुए दर्शनार्थियों को सम्बोधित करते हुए अत्यन्त सुशिष्टतासम्पन्न भाव अभिव्यक्ति किये।

सद्गुरुदेव १९५०, २ नवम्बर को गान्धी आश्रम (उस समय सत्याग्रह आश्रम) साबरमती गये थे, उन्हीं का पदानुसरण करते हुए सभी वरिष्ठ स्वामी जी ३५० भक्तों सहित ५ नवम्बर की सन्ध्या को साबरमती गये। साबरमती आश्रम के श्री अमृत मोदी जी ने स्वामीजीओं को फूलमाला पहनाते हुए अत्यन्त सम्मान पूर्वक स्वागत किया, सारे आश्रम के दर्शनार्थ ले कर गये तथा गान्धी–चरखे की प्रतिकृति एवं पुस्तकें भेंट कीं।

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

परम आराध्य सद्गुरुदेव के गहन आशीर्वाद से दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, लक्ष्मण-झूला के निकट तपोवन में स्थित, अपने ही एक अंग 'शिवानन्द होम' द्वारा अपनी विनम्र सेवा में सतत संलग्न है। यह उन लोगों को चिकित्सीय-सुविधा देता एवं देख-रेख करता है, जिन्हें भरती हो कर इलाज करवाने की आवश्यकता है किन्तु सामान्य रोग न होने के कारण अथवा देख-रेख के लिए कोई सहायक न होने के कारण (जो कि अन्य सभी चिकित्सीय संस्थाओं में आवश्यक होता है) उन्हें भरती नहीं किया जाता।

वे अन्य लोगों के द्वारा अपमानित, तिरस्कृत किये गये, घृणास्पद एवं हास्यास्पद दृष्टि से देखे गये, किन्तु परमात्मा की दृष्टि में उन्होंने देखा कि कृपा की झलक थी। पवित्रात्माओं द्वारा उन्हें प्रेम मिला : भगवान् ईसा, सन्त फ्रांसिस, गुरु नानक तथा फ़ादर डमेन, और उन्हें स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने निधि के समान रखा और पूर्ण प्रेम दियाह्वह्वयह वे लोग हैं जो ऐसे रोग से ग्रस्त हैं जिसमें संवेदनाशक्ति समाप्त हो जाती है तथा ऐसे घाव हाथों, पाँवों तथा अन्य किसी भी अंग में हो कर उन्हें अंगहीन कर देते हैं। दर्द के अभाव में घावों की उपेक्षा कर दी गयी होती है और जब उनके रोग का पता चलता है तब स्थिति सुधार की अवस्था से बहुत दूर निकल चुकी होती है, परिणाम समाज द्वारा निष्कासन तथा निकट सम्बन्धियों द्वारा तिरस्कार एवं बहिष्कार होता है जो मानसिक आघात का कार्य करता है।

शारीरिक घाव तो भरे जा सकते हैं किन्तु अलग कर दिये जाने का, एकाकी असहाय रह जाने का घाव, यदि भरे भी तो बहुत ही लम्बे समय में भर पाता है। एक व्यक्ति, जो सुखपूर्वक अपने भरे पूरे परिवार सहित सम्मानपूर्वक समाज में रहता हो और अचानक दुर्भाग्य के झटके से सड़कों पर एकाकी फेंक दिया जाये; शरीर पर असंख्य घिनौने घावों को लिये हुए, समाज द्वारा तिरस्कृतह्वह्वयह अपमान-तिरस्कार का घाव भरने की शक्ति आधुनिक विज्ञान के पास नहीं है।

केवल हमारे प्रिय गुरुदेव तथा श्री स्वामी जी महाराज जैसे आध्यात्मिक महामानव ही ऐसे लोगों के मन की दशा को समझते थे। स्वामी जी महाराज ने उन्हें अपनाया, उन्हें स्नेह दिया और उनकी देख-रेख की। अस्पृश्यों को उन्होंने प्रेमपूर्वक स्पर्श किया, उनके शारीरिक ही नहीं मानसिक घावों को भी भर दिया। इसी जीवन में उनका पुनर्जन्म हो गया। शरीर से भले ही वे वही थे, विकलांगता में भले ही सुधार नहीं हो सकता था, तो भी एक दिव्य जागरूकता का स्पर्श उन्होंने पा लिया थाह्वह्वस्वयं साकार प्रेम का स्पर्श उन्हें मिल गया था।

इस माह एक बन्धु का देहान्त हो गया। कुष्ठरोग से पीड़ित होने पर भी उसका जीवन धन्य था। असंख्य कष्टों और मुसीबतों के झेलने के बाद भी उसका जीवन धन्य था, क्योंकि श्री स्वामी जी महाराज की अपार कृपा और आशीर्वाद उसे प्राप्त हुए थे। उसको स्वामी जी महाराज का सम्पर्क प्राप्त करने का सौभाग्य मिला थाह्वह्वबल्कि इससे भी बढ़ कर महत्त्वपूर्ण यह है कि स्वामी जी महाराज उसे पूरी तरह से, बहुत दीर्घकाल से जानते थे, उसे स्पर्श किया था स्वामी जी ने, उसे आशीर्वाद और निर्देशन दिये थे, उसको परिवर्तित कर दिया था पूर्णरूपेण! उसकी आत्मा शाश्वत शान्ति और आनन्द में निवास करे!

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः!

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' ***स्वामी शिवानन्द***

सूचना

राजा पार्क, जयपुर, राजस्थान की दिव्य जीवन संघ शाखा की स्वर्ण-जयन्ती का कार्यक्रम

परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अहैतुकी कृपा से दिव्य जीवन संघ की राजा पार्क, जयपुर शाखा अपनी स्वर्ण-जयन्ती के उपलक्ष्य में १३ से १५ अप्रैल २०१२ तक एक त्रि-दिवसीय आध्यात्मिक सम्मेलन सिद्धेश्वर मन्दिर, राजा पार्क, जयपुर (राजस्थान) में आयोजित कर रही है। इस सम्मेलन में मुख्यालय से वरिष्ठ सन्त-वर्ग तथा अन्य संस्थाओं से विद्वज्जन आशीर्वचन देंगे। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा विश्व-शान्ति के लिए आयोजित इस सम्मेलन में दिव्य जीवन संघ की सभी शाखाओं के सदस्यों एवं भक्तों को सादर एवं हार्दिक आमन्त्रण है।

प्रतिनिधि शुल्क : रु. २००/-

सभी प्रेषित धनराशि कृपया **'डिवाइन लाइफ सोसायटी, राजा पार्क, जयपुर'** के नाम पर जयपुर में देय बैंक ड्राफ्ट अथवा चैक द्वारा भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क-सूत्र : (१) श्री जी. एन. बोधा, अध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ, राजा पार्क शाखा, जयपुर, २३८-बी, पार्वती मार्ग, राजा पार्क, जयपुरह्लह्ल३०२ ००४ (राजस्थान); (२) प्रो. भगवती पी. शास्त्री, सचिव, मो. नं. ९४१३११४७६०; (३) श्री राजीव धवन, सह सचिव, मो. नं. ९९५०५५७४५　　* * *

सूचना

आध्यात्मिक शिविर

दिव्य जीवन संघ, चंडीगढ़ शाखा का १०, ११ मार्च २०१२ को वार्षिकोत्सव

दिव्य जीवन संघ, चंडीगढ़ शाखा, चंडीगढ़ शिवानन्द आश्रम की चतुर्थ वर्षगाँठ १० और ११ मार्च २०१२ को मना रही है। इस शुभ अवसर पर वहाँ एक आध्यात्मिक शिविर आयोजित किया जा रहा है। मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ सन्त इस अवसर की शोभा वृद्धि करेंगे। सभी भक्त इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो कर अत्यधिक आध्यात्मिक उत्थापन की अनुभूति प्राप्त करने के लिए सादर आमन्त्रित है।

नामांकन तथा विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क-सूत्र

(१) श्री एफ. लाल कंसल, अध्यक्षह्लह्ल०९८१४०१५२३७; (२) डा. रमणीक शर्मा, सचिवह्लह्ल०९८१४१०५१५४

पत्रव्यवहार के लिए

सचिव, शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ, #२, सैक्टर २९-ए, चंडीगढ़ह्लह्ल१६० ०३०, दूरभाषह्लह्ल०१७२-२६३९३२२

पुण्य स्मृति में

अत्यन्त शोकपूर्वक हम दिव्य जीवन संघ राशिपुरम शाखा के प्रधान **श्री तिरु गुरु भक्ति रत्न एम. एस. ए. जयराम** के ४ नवम्बर २०११ को हुए निधन की सूचना दे रहे हैं।

श्री जयराम जी को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के १९५७ में दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य मिला था। सद्गुरुदेव तथा उनके उपदेशों से अत्यधिक प्रभावित हो कर उन्होंने १९६४ में राशिपुरम में दिव्य जीवन संघ की शाखा प्रारम्भ की तथा उसके लिए स्थान दिया, तथा भवन-निर्माण हेतु धन भी दिया। उन्होंने शाखा के प्रधान के पद पर ४५ वर्ष सतत सेवा की।

उनकी आत्मा परम पिता परमात्मा तथा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पावन चरणों में शाश्वत स्थान प्राप्त करे, यही प्रार्थना है।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी की शाखाओं के प्रतिवेदन

आगरा (उत्तर प्रदेश): वर्ष २०११ के माह अक्तूबर और नवम्बर की अवधि में, शाखा ने : प्रति रविवार सत्संग और हवन, प्रति मंगलवार को श्री हनुमान चालीसा के पाठ पूर्ण कर, दीपावली को हवन, ज्ञानप्रदायक प्रवचन और भक्ति-संगीत सम्पन्न किये।

अहिवारा (छत्तीसगढ़): दैनिक सान्ध्य-सत्संग के आधिक्य में, शाखा द्वारा प्रति एकादशी को सामूहिक महामृत्युंजय जप किया गया।

अम्बाला (हरियाणा): नियमित गतिविधियाँ॥दैनिक सान्ध्य-महामृत्युंजय के आधे घण्टे के जप पश्चात् सत्संग; प्रति मंगलवार श्री हनुमान जी के स्तोत्र-भजन-कीर्तन और ध्यान; जलसेवा और होम्योपैथि-सेवा। विशेष गतिविधियाँ॥(१) दिनांक ३० से नवम्बर के दिनांक ६ पर्यन्त भागवत-सप्ताह जिसमें १७ विद्वान् पण्डितों द्वारा पूजा और अन्य कार्यक्रम। (२) वृक्षारोपण॥१५ सक्रिय सदस्यों द्वारा समीप के ग्राम की पोलिटेकनिक संस्था में ५१ फल-वृक्षारोपण और ४०० छात्रों को द डिवाइन लाइफ सोसायटी विषयक प्रवचन दिये गये। (३) दिनांक ८ नवम्बर होम्योपैथि औषधालय का स्थापना-दिन-उत्सव। (४) शाखा-अध्यक्ष डा. ओ. पी. शर्मा जी की होम्योपैथि औषधालय की निःस्वार्थ सेवा के लिए श्री श्री गुरुद्वारा, उनका सन्मान।

बंगलूरू (कर्नाटक): नियमित गतिविधियाँ॥साप्ताहिक पादुका-पूजा, साप्ताहिक सत्संग, श्री देवी-पूजा, प्रति शुक्रवार स्तोत्रपाठ, स्वाध्याय, आरती, प्रसाद; माह के प्रथम, तृतीय और चतुर्थ रविवार के दिनों को क्रमशः मन्दिर में भव्य-अभिषेक के साथ जप-स्वाध्याय; ३ घण्टों का अखण्ड कीर्तन और भक्ति-संगीत। विशेष गतिविधियाँ॥(१) शिवानन्द-जयन्ती : सितम्बर ८, ९, १० और ११ दिनांक को चार-दिवसीय क्रमशः पादुका-पूजा-भजन-गुरुदेव के जीवन पर विडियो-कैसेट-दर्शन; भक्ति-संगीत; आदरणीय श्री स्वामी बसवानन्द जी द्वारा प्रवचन और आदरणीय श्री स्वामी अपरोक्षानन्द माता जी का प्रवचन। (२) चिदानन्द-जयन्ती को समान कार्यक्रमों के साथ साथ, कुष्ठरोगियों के सरकारी अस्पताल के मरीजों को अन्न और वस्त्र का दान। (३) नवरात्रि-पूजा। (४) गुरुदेव की दिनांक १९ अक्तूबर १९५० को, शाखा की मंगल मुलाकात को की गयी पादुका-पूजा के पावन स्थान पर गुरुदेव की तस्वीरें स्थानापन्न की गयी। (५) स्कन्द-पूजा॥६ दिवसीय उत्सव और कुमार-पूजा।

बरबिल् (ओडिशा): शाखा की नियमित गतिविधियाँ॥साप्ताहिक सत्संग-गृह-सत्संग, चिदानन्द-दिवस को मासिक साधना-दिन, शिवानन्द चेरिटेबल होम्योपैथि-औषधालय द्वारा गत तीन माहों में १७५० मरीजों के उपचार। विशेष गतिविधियाँ॥(१) शिवानन्द-जयन्ती को आदरणीय श्री स्वामी असीमानन्द जी द्वारा प्रवचन सहित ५ दिवसीय ज्ञान-यज्ञ। (२) चिदानन्द-जयन्ती को दिनभर के कार्यक्रम और निर्धनों को अन्न तथा वस्त्रों का दान। रात्रि-सत्संग किया गया।

बेलारी (कर्नाटक): दैनिक पूजा, साप्ताहिक सत्संग और परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की १० वीं पुण्यतिथि को विशेष सत्संग के आधिक्य में दीपावली को दीप-सुशोभन और कार्तिक॥माहभर की पूजा का समापन-समारोह।

भुवनेश्वर (ओडिशा): दैनिक पूजा के आधिक्य में, साप्ताहिक सत्संग, मासिक साधना-दिवस, ३ घण्टों के, श्री राम जय राम जय जय राम के सामूहिक कीर्तन के पश्चात् दो घण्टों पर्यन्त भागवत-पारायण जिसमें ६४ भक्तों ने भाग लिया; ६ विशेष गृह-सत्संग, और एक समीप के ग्राम में मन्दिर में, (१) अक्तूबर के दिनांक १४ से १६ पर्यन्त और नवम्बर के दिनांक २५ से २७ पर्यन्त ध्यान-वर्ग, श्री रास-पुराण पारायण ५ दिनों पर्यन्त माह नवम्बर में और पवित्र कार्तिक माह में दिनांक १०-११ नवम्बर को श्री विष्णुसहस्रनाम-स्तोत्र का सामूहिक पाठ भी पूर्ण किये गये।

छत्रपुर (ओडिशा): शाखा अपनी नियमित गतिविधियाँ सुचारु रूप से सम्पन्न करती है, जैसे कि॥दैनिक सत्संग, साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द-दिवस और चिदानन्द-दिवस, संक्रान्ति-सुन्दरकाण्ड पारायण। विशेष में, ८ गृह-सत्संग, १ विशेष गृह-सत्संग, दिनांक २ अक्तूबर को प्रवचन-युक्त विशेष गृह-सत्संग तथा कार्तिक के पावन माह में राम चरित मानस का पूर्ण माह भर दैनिक पारायण। इन अन्तिम दो विशेष गतिविधियों में भक्तों ने विशाल संख्या में भाग लिया। पूर्णिमा के समापन-समारोह में, दिनांक १० नवम्बर को, दो सन्तों ने प्रवचन दिये।

दिगपहंडी (ओडिशा): दैनिक द्विवार पूजा के अतिरिक्त शाखा ने सप्ताह में द्विवार सत्संग, शिवानन्द-दिवस और चिदानन्द-दिवस को पादुका-पूजा, विशेष संक्रान्ति सत्संग, और दो गृह-सत्संग भी सुचारु रूप से पूर्ण किये।

जयपुर, मालवीय नगर (राजस्थान): नियमित गतिविधियाँ॥अध्ययन-मण्डली में दैनिक स्वाध्याय, १ घण्टा दैनिक ध्यान-सभा और योगासन-वर्ग, साप्ताहिक सत्संग में हवन, साप्ताहिक मातृ-सत्संग और निर्धनों को साप्ताहिक अन्न-वितरण। विशेष गतिविधियाँ॥(१) शाखा की रजत-जयन्ती के निमित्त आयोजित दो दिवसीय द डिवाइन लाइफ परिषद् में परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने परिषद् में पावन उपस्थिति दे कर प्रेरक प्रवचन दिये।

जयपुर (ओडिशा): दैनिक गतिविधियों में॥द्विवार पूजा के अतिरिक्त साप्ताहिक द्विवार सत्संग, दो गृह-सत्संग। विशेष में, शिवानन्द-जयन्ती को साढ़े बारह घण्टों के कार्यक्रम में ८० प्रतिभागी थे और सान्ध्य-सत्संग में आदरणीय श्री स्वामी कृष्णप्रेमानन्द जी का प्रवचन एवं चिदानन्द-जयन्ती को समान कार्यक्रमों के आधिक्य में एक

अनाथालय में ३० अन्तेवासियों को और ३८ निराधार जनों को खाद्य-पदार्थ वितरित हुए; साढ़े चार घण्टों पर्यन्त गीता-यज्ञ का आयोजन हुआ।हरेक श्लोक के सामूहिक उच्चारण के साथ, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र के सम्पुट सहित आहुतियाँ अर्पित हुई। नवरात्रि में प्रातः ५ से ६ पर्यन्त, हर रोज, छात्रों ने पूजा की और सायंकाल में सब भक्तों ने पूजा की। विजयादशमी अति पवित्रता से मनायी गयी। कालेज के छात्रों ने विशाल संख्या में भाग लिया।

काकिनाडा (आन्ध्र प्रदेश): साप्ताहिक द्विवार भिन्न केन्द्रों में सत्संग के अतिरिक्त शाखा, श्री सुब्रह्मण्येश्वर के मन्दिर में कार्तिक-समारोह में संयुक्त हुई। ४० सदस्यों ने आमन्त्रण पर, एक सुप्रसिद्ध मन्दिर में जा कर, साढ़े तीन घण्टों पर्यन्त भजन-प्रस्तुति की।

खातिगुडा (ओडिशा): दैनिक द्विवार पूजा के अतिरिक्त, शाखा ने प्रति गुरुवार साप्ताहिक सत्संग, प्रति एकादशी को श्री विष्णु सहस्रनाम सहित सत्संग, १२ घण्टों के अखण्ड कीर्तन सहित मासिक साधना-दिन, दिनांक २० नवम्बर को नारायण-सेवा और दो गृह-सत्संग भी पूर्ण किये।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): शाखा के रविवारीय साप्ताहिक सत्संगों में संकीर्तन और स्वाध्याय समाविष्ट हैं और प्रति एकादशी को मातृ-सत्संग, पुरुषों के लिए और महिलाओं के लिए क्रमशः प्रभात और सायंकाल योगासन वर्ग तथा प्रति रविवार ध्यान-योग वर्ग होते हैं।

लांजिपल्ली (ओडिशा): शाखा द्वारा साप्ताहिक सत्संग, साप्ताहिक तथा संक्रान्ति को श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण और माह के अन्तिम रविवार को नारायण-सेवा सम्पन्न होती है। विशेष में, दिनांक २७ नवम्बर को, समान कार्यक्रम सहित नारायण-सेवा की गयी।

नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश): नियमित गतिविधियाँ।हरेकदैनिक सत्संग, प्रति शुक्रवार देवी-स्तोत्र का सामूहिक पाठ तथा प्रतिदिन श्री विष्णु-स्तोत्र एवं कार्तिक-महिमा का स्वाध्याय। विशेष में, शिवानन्द-जयन्ती प्रवचन और सरकारी अस्पताल के, सब ३०० मरीजों को फल-बिस्कुट-पैकेटों का वितरण; चिदानन्द-जयन्ती को, परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के पवित्र जीवन पर प्रवचन सहित, सरकारी अस्पताल के मरीजों को फल-बिस्कुटों का वितरण और निर्धन मरीजों को वस्त्र-दान किये गये।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): ब्राह्ममुहूर्तीय दो घण्टों का प्रार्थना-सत्र, दैनिक सान्ध्य-सत्संग, साप्ताहिक गृह-सत्संग, प्रति शनिवार और प्रति एकादशी को स्तोत्र-पाठ तथा गीता-पारायण एवं प्रति माह दिनांक ३ को ६ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र कीर्तन आदि शाखा ने सुचारु रूप से सम्पन्न किये।

फुलबानी (ओडिशा): दैनिक द्विवार पूजा, साप्ताहिक सत्संग और शिवानन्द-दिवस और चिदानन्द-दिवस को पादुका- पूजा के आधिक्य में, शाखा द्वारा, विशेष भागवत-सप्ताह।उसके समापन में, हवन, संकीर्तन, ५०० भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन आदि विशेष कार्यक्रम किये गये।

राउरकेला, स्टील टाउनशिप (ओडिशा): शाखा ने ३ गृह-सत्संग, दो साधना-दिवस, जिनमें पादुका-पूजा, गीता-पाठ और अन्य स्तोत्र-पाठ तथा अन्य कार्यक्रम; विशेष में, दिनांक २० नवम्बर को, निःशुल्क मेडिकल, कैम्प, जिसमें तीन डाक्टरों ने १८० मरीजों के परीक्षण कर, निःशुल्क दवाइयाँ दी।

सालेपुर (ओडिशा): नियमित गतिविधियाँ।हरेकदैनिक ब्राह्म-मुहूर्तीय सभा, पूजा, सत्संग सायंकाल मेंहरेकइनके अतिरिक्त रविवार के दिनों को क्रमशः गीता-पारायण, योगासन-ध्यान सभा, साधना-दिवस, विशेष सत्संगहरेक६ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र जप और विशेष सत्संग किये गये। दिनांक ८ अक्तूबर को श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण सम्पन्न किये गये। ११४ मरीजों को निःशुल्क स्वास्थ्य-सेवा एवं ३३ छात्रों को योगासन-प्रशिक्षण दिया गया।

साउथ बलंडा (ओडिशा): नियमित गतिविधियाँ।हरेकद्विवार पूजा, साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द-दिवस, चिदानन्द-दिवस को पादुका-पूजा और विशेष सत्संग, संक्रान्ति-दिवस को ३ घण्टों का अखण्ड महा-मृत्युंजय-मन्त्र का जप और दिनांक २६ नवम्बर को ३ घण्टों का महामन्त्र-कीर्तन। विशेष में, नवम्बर के दिनांक ४ से १० पर्यन्त श्रीमद्भागवत-सप्ताह सम्पन्न हुआ।

सुनाबेडा (ओडिशा): नियमित गतिविधियाँ।हरेकसाप्ताहिक द्विवार सत्संग, दिनांक १३ और २० नवम्बर को दो गृह-सत्संग। विशेष गतिविधियाँ।हरेक(१) श्री दुर्गा-अष्टमी और विजयादशमी : विशेष पूजा। (२) रास-लीला पूर्णिमा : अनेक भक्तों का यह दिवस, मन्त्र-दीक्षा होने से दिनभर के आध्यात्मिक कार्यक्रम, आनन्दपूर्वक सम्पन्न हुए। (३) शाखा-इमारत का पुनर्निर्माण कार्य पूर्ण होने से गुरुदेव की पादुका और अन्य विग्रहों को पुनः स्थानापन्न किये गये। (४) कार्तिक-पूर्णिमा : सुआयोजित कार्यक्रम : पादुका-पूजा, साढ़े तेरह घण्टों का नाम-संकीर्तनहरेकजिसमें कुछ महानुभाव, अनेक कीर्तन-मण्डलियों की संयुक्तताहरेकअन्य आध्यात्मिक संस्थाएँ भी संयुक्त हुईं। सब भक्तों के लिए प्रसाद-योजना। नगर-संकीर्तन किया गया। (५) आदरणीय श्रीमती जे. ओझा माता जी द्वारा योगासन-वर्ग।

सुरेन्द्रनगर (गुजरात): शाखा की नियमित गतिविधियाँ।हरेकजैसे कि, दैनिक पादुका-पूजा और सत्संग, प्रति रविवार को डा. कारीयाजी द्वारा प्रवचन, प्रति शनिवार श्री सुन्दरकाण्ड पारायण और जीव-सेवा। विशेष में, श्रीमद् भागवतम् पर प्रवचन का जाहीर कार्यक्रम सुचारु रूप से समाप्त हुआ।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा ने, नवम्बर के दिनांक १३ और दिनांक २७ को, अपने पाक्षिक सत्संग किये जिनमें प्रार्थना, स्तोत्रपाठ, जप, आरती, प्रसाद समाविष्ट थे। अन्य एक गृह-सत्संग भी किया गया जिसमें अनेक भक्तों की उपस्थिति थी। * * *

कवर

प्रत्येक स्थान में भगवान् की उपस्थिति का अनुभव

जीवन बहुमूल्य है; अतः उपयोगी कार्यों के सम्पादन में ही जीवन व्यतीत करें। दैनिक प्रार्थना-पूजा के लिए दिन का कुछ समय निश्चित कर लें। जहाँ-कहीं भी आप जायें, भगवान् की उपस्थिति का अनुभव करें; क्योंकि 'वह' प्रत्येक स्थान में हैं। 'वह' हमारे श्वासों तथा हाथ-पैरों से भी अधिक निकट हैं। 'वह' आपमें तथा आप 'उनमें' हैं। सदैव उन्हीं में निवास करें।

स्वामी चिदानन्द

प्रत्येक नव-वर्ष का प्रारम्भ भगवान् की उपस्थिति का कण-कण में अनुभव करके करें। भगवान् से निरन्तर प्रार्थना करते रहें। ऐसा अनुभव करते रहें कि 'वह' आपके अपने ही हैं। अन्तर्मुखी बन कर अन्दर की ओर देखें तथा परमानन्द का अनुभव करें। **स्वामी चिदानन्द**